Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्रीसूक्तम्

नाथ पुस्तक भण्डार
194 – दरीबा कलां, दिल्ली 110006

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्र रामायण

मनुष्य की सफलता में विपत्तियां सहायक होती हैं। अधिकांश लोग इनसे भयभीत हो जाते हैं। यह उनकी मानसिक दुर्बलता का परिचायक है। विपत्तियों से टक्कर लेने के लिए सबल मानसिक शक्ति की आवश्यकता है। इसका सशक्तउपाय मंत्र शक्ति है।

प्रातः स्मरणीय गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस के दोहे-चौपाई मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक पुस्तक में भक्तप्रिय पारसनाथ जी ने किया है। इन मंत्रों का रामायण के साथ सम्पुट लगाकर पाठ करने से हर मनोकामना अवश्य पूरी होती है। आप भी लाभ उठाइये।

बारहवां संस्करण।

मूल्यः रु. २०.०० डाक व्यय अलग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"अमर-राज" ग्रन्थमाला-ग्रन्थाङ्क-७

ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तम्

(श्रीयंत्र पूजन विधि, श्रीसूक्त सम्पुटित क्रम प्रकार, लक्ष्मी-पुरुषसूक्त, पुराणोक्त श्रीसूक्त, धनदा-लक्ष्मीस्तोत्र, कुबेर पूजन-स्तोत्र एवं विभिन्न यंत्रों सहित)

सम्पादक

याज्ञिकसम्राट पण्डित वेणीराम गौड़ वेदाचार्य के पुत्र

पण्डित उमेश मिश्र गौड़ वेदाचार्य, पुराणेतिहासाचार्य

वेदाध्यापक-शास्त्रार्थ महाविद्यालय, वाराणसी

परामर्शदाता :

दत्तात्रेयानन्दनाथ

(सम्पादक- श्रीविद्यारत्नाकर, श्रीविद्यावरिवस्या इत्यादि)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक :
卐 नाथ पुस्तक भण्डार
१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६
दूरभाष-३२७ ५३ ४४

संशोधित परिवर्धित संस्करण
जून, सन् १९९८

इस पुस्तक के साथ
श्री यंत्र मुफ्त

मूल्य : रु. ३०.००

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ लक्ष्मी पूजन सामग्री ❁

रोली	सुपारी-२०	पंच पल्लव
मौली (कलाबा)	पुष्पमाला	सर्वोषधि
धूपबत्ती	दूर्वा	गिरी का गोला-२
कपूर	इत्र की शीशी-१	लक्ष्मीजी की मूर्ति
केसर	इलायची छोटी	गणेशजी की मूर्ति
चन्दन	लवंग	सिंहासन
चावल	पेड़ा	लक्ष्मीजी के वस्त्र
यज्ञोपवीत-५	ऋतुफल	गणेशजी के वस्त्र
रुई	दुग्ध, दही	धान का लावा (खील)
अबीर (गुलाल)	घृत	कलश-ताम्र अथवा मिट्टी
बुक्का (अभ्रक)	चीनी	सफेद कपड़ा आधा मीटर
सिन्दूर	शहद	लाल कपड़ा आधा मीटर
पान-१०	गंगाजल	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवश्यक निवेदन

इस युग में धनवान् की ही प्रधानता और प्रतिष्ठा देखी जाती है। अतः सभी मनुष्य धनवान् बनना चाहते हैं। वस्तुतः देखा जाए तो धानके बिना किसी का कोई काम नहीं होता। इसीलिये मनुष्यमात्र धन की प्राप्ति के लिये विविध प्रकार के प्रयत्न करते हैं। धन-प्राप्ति के लिये ऋग्वेदोक्त 'श्रीसूक्त' बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसका नियमपूर्वक प्रतिदिन पाठ और हवन करने से निश्चित ही धन-प्राप्ति होती है। अतः, मैंने ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्तका 'सरला' नामक सरल अर्थ हिन्दी में कर दिया है, जिससे सभी लोग श्रीसूक्तका अर्थ समझकर इसका पाठ और हवन कर सकें।

श्रीसूक्तका यह संस्करण परिवर्तित ओर परिवर्द्धित है। इसमें श्रीसूक्त के साथ लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये अनेक महत्त्वपूर्ण धनका-लक्ष्मीस्तोत्रादि दिये गये हैं, जिनके पाठ करने से शीघ्र ही प्रचुर लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है।

पुराणोक्त श्रीसूक्त

श्रीसूक्त के पाठ करने का अधिकार केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यको ही है। शूद्र और स्त्री को नहीं है। अतः शूद्र और स्त्री के लिये 'पुराणोक्त श्रीसूक्त' दे दिया है, जिसके पाठ करने से शूद्र और स्त्रियाँ भी प्रचुर लक्ष्मीकी प्राप्ति कर सकती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋणहरण-स्तोत्र

वर्तमान समय में अधिक संख्यामें मनुष्य ऋण (कर्ज) से पीड़ित ओर चिन्तित हैं। उनके कल्याणार्थ अनेक प्रकार के 'ऋणहरण-स्तोत्र' ओर कुछ महत्वपूर्ण अनुष्ठान दे दिये हैं जिनके पाठ और अनुष्ठान करने से मनुष्य निश्चित ही ऋण से मुक्त होकर धनवान् बन जाते हैं। इसके साथ ही व्यापार में तरक्की के लिये महत्वपूर्ण यन्त्र और दुकान में बिक्री की वृद्धि के लिये विशिष्ट मन्त्र भी दे दिया है, जिसके द्वारा व्यापारी वर्ग को विशेष लाभ होगा।

धनदा लक्ष्मीयन्त्र

श्रीसूक्त के अनुसार निर्माण किया हुआ 'धनदा लक्ष्मीयन्त्र' दो प्रकार का मैं देता हूँ। दोनों प्रकार के यन्त्रों को रखने से लक्ष्मी की विशेष प्राप्ति होती है। दोनों प्रकार के यन्त्रों का मूल्य रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित २५) रुपया है।

लक्ष्मीयज्ञ

लक्ष्मीकी विशेष प्राप्ति के लिये 'लक्ष्मीयज्ञ' का भी विधान वेदादि शास्त्रों में कहा गया है। जो महानुभाव 'लक्ष्मीयज्ञ' करना चाहें, वे मुझसे पत्र व्यवहार द्वारा विचार-परामर्श कर सकते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्त में मैं, नाथ पुस्तक भण्डार, दिल्ली के मालिक श्रीयुत बाबू केदारनाथजी गुप्त महोदय को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने वर्णचतुष्टय के कल्याणार्थ ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्त हिन्दी भाषासहित प्रकाशन कर प्रशंसनीय कार्य किया है।

माघी पूर्णिमा
८ फरवरी, सन् १९८२

उमेश मिश्र गौड़
वेदाचार्य, पुराणेतिहासाचार्य
डी० ७/१४, सकरकन्द गली,
वाराणसी-१ (उत्तर प्रदेश)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. पूजन सामग्री	३
२. श्रीयन्त्र पूजन विधि	८
३. लक्ष्मीयन्त्र	१७
४. संक्षिप्त लक्ष्मीपूजनविधिः	१८
५. श्रीसूक्तका न्यास	२१
६. श्रीसूक्तम् (मूलपाठ)	२४
७. ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तम् (हिन्दी सहितम्)	२८
८. श्रीसूक्तस्य सम्पुट पुरश्चरण विधिः	३६
९. पुराणोक्तं श्रीसूक्तम्	४३
१०. लक्ष्मीसूक्तम्	४७
११. धनदालक्ष्मीस्तोत्रम्	५३
१२. धनदास्तोत्रम्	५८
१३. धनदादेवीस्तोत्रम्	६१
१४. धनदाकवचम्	६५
१५. महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रम्	७०
१६. कनकधारास्तोत्रम्	७४
१७. ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्	८२
१८. ऋणहर्तागणेशस्तोत्रम्	८५
१९. ऋणमुक्तिगणेशस्तोत्रम्	९०
२०. गणेशस्तवन से लक्ष्मीकी वृद्धि	९४
२१. ऋणमुक्ति के लिये कुछ प्रयोग	९६
२२. लक्ष्मी प्राप्तिं के लिये कुछ प्रयोग	१००
२३. व्यापार उन्नति का महत्वपूर्ण यन्त्र	१०४
२४. दुकान बिक्री वृद्धि विशिष्ट मन्त्र	१०४
२५. नवनिधिनाथ कुबेर	१०५
२६. कुबेर पूजन	१०७
२७. तुला तथा मान पूजन	१०७
२८. दीपावली पूजन	१०८
२९. पूरुषसूक्तम्	१०८
३०. लक्ष्मीस्तोत्र	११६
३१. महालक्ष्मीस्तोत्र	१२३
३२. लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्र	१३१
३३. आरती	१६१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री॥

श्रीयन्त्र पूजन करने की संक्षेप विधि

तन्त्र आगम ग्रन्थों में श्रीयन्त्र पूजन का विस्तृत और संक्षेप कई प्रकार की विधियां मिलती है। उस के अनुसार इच्छुक साधकों के लिये हम एक संक्षेप विधि प्रकाशित कर रहे हैं जिससे श्रीयन्त्र की पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

श्री यन्त्र की उपासना करने वालों के लिये यह परम आवश्यक है कि इस उपासना के ज्ञाता गुरु से मन्त्र दीक्षा ग्रहण करें। तदनन्तर उस मन्त्र का यथा विधि पुरश्चरण करें। इसके बाद श्री यंत्र का अर्चन करें।

श्री यन्त्र में १५३ देवताओं का अर्चन होता है। वालासादन करके विधि पूर्वक अर्चन करने से अभ्यास होने पर प्रायः तीन घण्टे लगते हैं। परन्तु इतना समय जिनके पास न हो वे इस विधि से पूजन करें। इससे श्री यन्त्र स्थित सभी देवताओं का पूजन सम्पन्न हो जाता है। इससे साधक पूर्ण पूजन का लाभ प्राप्त कर लेता है।

दत्तात्रेयानन्दनाथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थ्यन्त-खड्गमालामन्त्रः

अस्य श्रीखड्गमालामन्त्रस्य उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्य ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे, ललितादेवतायै नमः हृदये, क ५ बीजाय नमः गुह्ये, ह ६ शक्तये नमः पादयोः, स ४ कीलकाम नमः नाभौ, श्रीललिता-प्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः। कूटत्रयद्विरावृत्या करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनी
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड्शेखराम्
हस्तैरिक्षुधनुः सृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्रीचक्रस्थितसुन्दरी त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्॥

इति ध्यात्वा मानसैः संपूज्य।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं हृदयदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शिरोदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शिखादेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कवचदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नेत्रदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्रदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्वरितायै नमैः
ऐं ह्रीं श्रीं कुलसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नित्यायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नीलपताकायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं विजयायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ज्वालामालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चित्रायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं भगमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नित्यक्लिन्नायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं भेरुण्डायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वह्निवासिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महावज्रेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शिवदूत्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वासुदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरामानन्दमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं लघिमासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महिमासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ईशित्वसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वशित्वसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं महानित्यायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं मित्रीशमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं षष्ठीशमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं उड्डीशमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चर्यानाथमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं लोपामुद्रामय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अगस्त्यमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कालतापनमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं धर्माचार्यमय्यैनमः
ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं दीपकलानाथमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्रभाकरदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं तेजोदेवमय्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तिसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं इच्छासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्राप्तिसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कौमार्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं माहेन्द्र्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्राविण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिण्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं मनोजदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कल्याणदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रत्नदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वखेचर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वबीजायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वयोन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वत्रिखण्डायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रैलोक्यमोहन
चक्रस्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्रकटयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अहङ्काराकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शब्दाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं स्पर्शाकर्षिण्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववशङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमहाङ्कुशायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमेखलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमदनायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमदनातुरायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गरेखायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गवेगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गाङ्कुशायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमालिन्यैः नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभणचक्र-
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गुप्ततरयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं रूपाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रसाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गन्धकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चिताकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं धैर्याकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं स्मृत्याकर्षिण्यं नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नामाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं बीजाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं आत्माकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अमृताकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शरीराकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरकचक्र-
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गुप्तयोगिन्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्राविण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाह्लादिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्मोहिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वस्तम्भिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वजृम्भिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वशङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरञ्जिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्तिपूरण्यैः नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमन्त्रमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायकचक्र-
स्वामिन्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं सम्प्रदाययोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्प्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वप्रियङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधकचक्र
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं निगर्भयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वशिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं मोदिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं विमलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अरुणायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं जयिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कौलिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरोगहरचक्र
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रहस्ययोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं बाणिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चापिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं पाशिन्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वशक्त्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञानमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाधरस्वरूपायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वपापहरायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वेप्सितप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरक्षाकरचक्र स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं परापररहस्य-
योगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेश्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं अङ्कुशिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महाकामेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महावज्रेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महाभगमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महाश्रीसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदचक्र
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अतिरहस्ययोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाराज्ञ्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाशक्त्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहागुप्तायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाज्ञप्तायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरवासिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराश्रियै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरासिद्धायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराम्बमहात्रिपुर-
सुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहेश्वर्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं महामहानन्दायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहास्पन्दायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाशयायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाश्रीचक्रनगर-
साम्राज्यै नमस्ते नमस्ते
नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं-
ऐं ॐ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु।

इति चतुर्थ्यन्तखड्गमालामन्त्रः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीलक्ष्मी यन्त्रम्

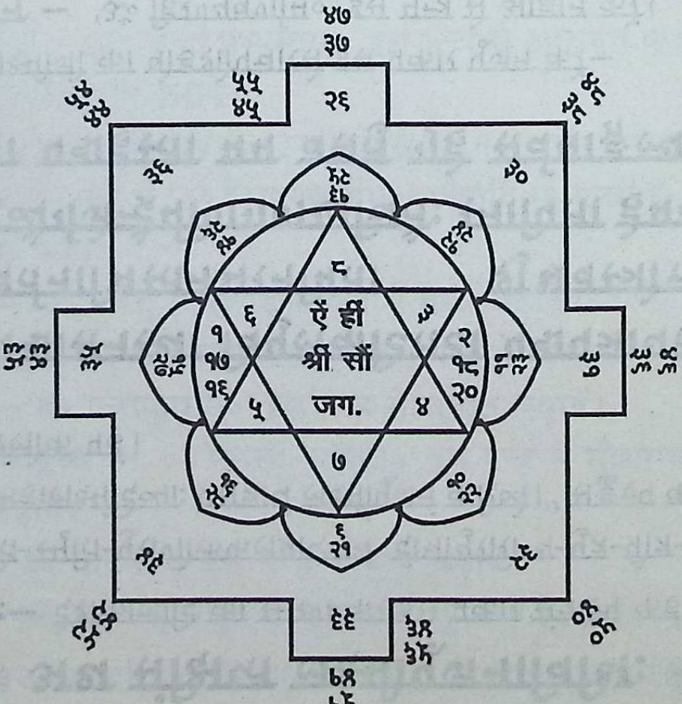

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ अथ संक्षिप्त लक्ष्मीपूजनाविधिः ❁

सङ्कल्प :– देशकालादि का स्मरण कर इस प्रकार संकल्प कहें–

"मम श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं दीर्घायुरारोग्य-पुत्र-पौत्र-धन-धान्यादि समृद्ध्यर्थ श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्रसन्नार्थं लक्ष्मींपूजनं करिष्ये।" सङ्कल्प करके लक्ष्मीजी के ध्यान का श्लोक पढ़ें।

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥

पश्चात् लक्ष्मीजी का षोडशोपचारसे इस प्रकार पूजन करें–

१. **आह्वान –** 'ॐ हिरण्यवर्णाम्०' इस मन्त्र से आह्वान करें।

२. **आसन –** 'ॐ तां म ऽआवह०' इस मन्त्र से आसन समर्पण करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३. **पाद्य** – 'ॐअश्वपूर्वाम्०' इस मन्त्र से पाद्य समर्पण करें।

४. **अर्घ्य** – 'ॐ कां सोस्मिताम्०' इस मन्त्र से अर्घ्य दें।

५. **आचमन** – 'ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०' इस मन्त्र से आचमन करावें। अनन्तर पञ्चामृत से स्नान करावें।

६. **स्नान** – 'ॐ आदित्यवर्णे०' इस मन्त्र से स्नान करावें। अनन्तर पञ्चोपचार से पूजन कर बाद में 'ॐ हिरण्यवर्णाम्०' इत्यादि १६ मन्त्रों से लक्ष्मीजी का अभिषेक करें।

७. **वस्त्र** – 'ॐ उपैतु माम्०' इस मन्त्र से वस्त्र चढ़ावें।

८. **उपवस्त्र** – 'ॐ क्षुत्पिपासामलाम्०' इस मन्त्र से कञ्चुकी (चोली) चढ़ावें।

९. **गन्ध** –'ॐ गन्धाद्वाराम्०' इस मन्त्र से चन्दन चढ़ावें।

१०. **सौभाग्यद्रव्य** – 'ॐ मनसः काममा०' इस मन्त्र से सौभाग्यद्रव्य, सिन्दूर आदि चढ़ावें।

११. **पुष्प**– 'ॐ कर्द्रमेन०' इस मन्त्र से पुष्प चढ़ावें।

१२. **धूप**– 'ॐ आपः सृजन्तु०' इस मन्त्र से धूपबत्ती दिखावें।

१३. **दीप**– 'ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०' इस मन्त्र से दीपक दिखावें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४. **नैवेद्य**– 'ॐ आर्द्रां यः करिणीम्०' इस मन्त्र से नैवेद्य समप्रण करें।

१५. **दक्षिणा**– 'ॐ तां म ऽआवह०' इस मन्त्र से दक्षिणा, आरती एवं पुष्पाञ्जलि करें।

१६. **नमस्कार**– 'ॐ यः शुचिः०' इस मन्त्र से नमस्कार करें। पश्चात्–

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

इस मन्त्र को कह कर ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। इस प्रकार तीन बार कहें।

इति संक्षिप्त लक्ष्मीपूजनविधिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ श्रीसूक्त न्यासः

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप्छन्दः, चतुर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पंचमी-षष्ठ्योस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनुष्टुप्छन्दः, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, न्यासे पाठे (हवने) च विनियोगः।

१. **ॐ हिरण्यवर्णाम्०**— इस मन्त्र से दाहिने हाथ से बाएँ हाथ का स्पर्श करें।
२. **ॐ तां म ऽआवह०**— इस मन्त्र से बाम हाथ से दाहिने हाथ का स्पर्श करें।
३. **ॐ अश्वपूर्वाम्०**— इस मन्त्र से बाएँ पैर का स्पर्श करें
४. **ॐ कां सोस्मिताम्०**— इस मन्त्र से दाहिने पैर का स्पर्श करें।
५. **ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०**— इस मन्त्र से बाएँ जंघा का स्पर्श करें।
६. **ॐ आदित्यवर्णे०**— इस मन्त्र से दाहिने जंघा का स्पर्श करें।
७. **ॐ उपैतु माम्०**— इस मन्त्र से बाएँ कटि-भाग (कमर) का स्पर्श करें।
८. **ॐ क्षुत्पिपासामलाम्०**— इस मन्त्र से दाहिने कटि-प्रदेश का स्पर्श करें।
९. **ॐ गन्धद्वाराम्०**— इस मन्त्र से नाभि का स्पर्श करें।
१०. **ॐ मनसः काममाकूतिम्०**— इस मन्त्र से हृदय का स्पर्श करें।
११. **ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०**— इस मन्त्र से वाम भुजा का स्पर्श करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१२. ॐ आपः सृजन्तु०– इस मन्त्र से दक्षिण भुजा का स्पर्श करें।
१३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०– इस मन्त्र से कण्ठ का स्पर्श करें।
१४. ॐ आर्द्रां यः करिणीम्– इस मन्त्र से मुख का स्पर्श करें और हाथ धोएँ।
१५. ॐ तां म ऽआवह०– इस मन्त्र से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें।
१६. ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०– इस मन्त्र से सिर का स्पर्श करें।

अथ षडङ्गन्यासः

१. ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०– इस मन्त्र से हृदय का स्पर्श करें।
२. ॐ आपः सृजन्तु०– इस मन्त्र से सिर का स्पर्श करें।
३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०– इस मन्त्र से शिखा का स्पर्श करें।
४. ॐ आर्द्रां यः करिणीम्०– इस मन्त्र से दोनों कवचों (भुजाओं) का स्पर्श करें।
५. ॐ तां म ऽआवह०– इस मन्त्र से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें।
६. ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०– इस मन्त्र से सिर के ऊपर से हाथ घुमाकर 'अस्त्राय फट्' कहें। पश्चात् लक्ष्मी का इस प्रकार ध्यान करें–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैर्नित्यं
सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तम्

सङ्कल्पः— देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थम् अलक्ष्मीविनाशपूर्वक मनोऽभिलषितविपुललक्ष्मीप्राप्त्यर्थं सर्वदा मम गृहे लक्ष्मीनिवासार्थ च श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्रीत्यर्थ श्रीसूक्तस्य पाठमहं करिष्ये।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १ ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तप्रयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामअलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

इति श्रीसूक्तं समाप्तम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ हिन्दी भाषा सहितं ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप बीते हुए सभी वृत्तान्तों को जाननेवाले तथा बतलाने वाले हैं। अतः सुवर्ण के समान पीतवर्णवाला तथा किञ्चित् हरितवर्णवाली तथा हरिणी रूपधारिणी सुवर्णमिश्रित रजतकी माला धारण करनेवाली, चाँदी के समान धवल पुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशमान तथा चन्द्रमा की तरह संसार को प्रसन्न करनेवाली या चञ्चला हिरण्य के समान रूपवाली या हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसे गुणों से युक्त लक्ष्मी को मेरे लिये बुलाओ॥११॥

ॐ तां म आ व ह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे जातवेदा अग्निदेव ! आप उन जगत् प्रसिद्ध लक्ष्मीजी को मेरे लिये बुलाओ जिनके आह्वान करने पर मैं सुवर्ण, गौ, अश्व और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥

जिस देवी के आगे घोड़े और मध्य में रथ हैं अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ में जुते हुए हैं, ऐसे रथ में बैठी हुई, हाथियों के निनाद से संसार को प्रफुल्लित करनेवाली देदीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूँ। दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करे ॥ ३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तप्रयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४॥

जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता है, जो चारों ओर सुवर्ण से ओत-प्रोत है एवं दया से आर्द्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदयवाली या समुद्र से प्रादुर्भूत होने के कारण आर्द्र शरीर होती हुई भी देदीप्यमान है। स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाला, कमल के ऊपर विराजमान, कमल के सदृस गृह में निवास करनेवाला संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूँ ॥ ४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५॥

चन्द्रमा के समान प्रकाशवाली, प्रकृत कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्ग-लोक में इन्द्रादि देवों से पूजित, अत्यन्त दानशीला, कमल के मध्य में रहनेवाली, सभी की रक्षा करनेवाली एवं आश्रयदात्री, जगद्विख्यात उन लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता हूँ। हे लक्ष्मी! आपकी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो। अतः मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ ॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे सूर्य के समान कान्तिवाली ! आपके तेजोमय प्रकाश से बिना पुष्प के फल देनेवाला एक वृक्ष-विशेष उत्पन्न हुआ। तदनन्तर आपके हाथ से बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ। उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे बाह्य ओर आभ्यन्तर की दरिद्रता को नष्ट करे ॥ ६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

हे लक्ष्मी ! देवसख अर्थात् श्री महादेव के सखा (मित्र) इन्द्र कुबेरादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्निदेव की उपासना करूं। एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ या कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्त्ति अर्थात् दक्षकन्या कुबेर की कोशशाला या यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् धन और यश दोनों ही मुझे प्राप्त हों। मैं इस संसार में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेर ! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें। ॥ ७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामअलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूख तथा प्यासरूप मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मी की ज्येष्ठ भगिनी दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ अर्थात् दूर करता हूँ। हे लक्ष्मी! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥

सुगन्धित पुष्प के समप्रण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी न दबने योग्य, धन-धान्य से सर्वदा पूर्णकर गौ, अश्वादि पशुओं की समृद्धि देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा संसार-प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में सादर बुलाता हूँ ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

हे लक्ष्मी! मैं आपके प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप (अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव-व्रीह्यादि) एवं अन्नों के रूप (अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य-चतुर्विधा भोज्य पदार्थ) इन सभी पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और यश मुझ में आश्रय लें अर्थात् मैं लक्ष्मीवान् एवं कीर्तिमान् बनूँ॥ १०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११॥

'कर्दम' नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम ! तुम मुझे में अच्छी प्रकार से निवास करो अर्थात् कर्दम ऋपि की कृपा होने पर लक्ष्मी को मेरे यहाँ रहना ही होगा। हे कर्दम ! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करें, केवल इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली सम्पूर्ण संसार की माता लक्ष्मी (ख्याति नामक कन्या की पुत्री) को मेरे वंश में निवास कराओ ॥ ११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२॥

जिस प्रकार कर्दम की सन्तति 'ख्याति' से लक्ष्मी अवतरित हुई, उसी प्रकार कल्पान्तर में भी समुद्रमन्थन द्वारा चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ है। इसी अभिप्राय से कहा जा सकता है कि वरुण देवता स्निग्धा अर्थात् मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करें। (पदार्थों में सुन्दरता ही लक्ष्मी है। लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चिक्लीत और श्रीत– ये चार पुत्र हैं। इनमें 'चिक्लीत' से प्रार्थना की गई है कि) हे चिक्लीत नामक लक्ष्मीपुत्र ! तुम मेरे गृह में निवास करो। केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ ॥ १२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १३॥

हे अग्निदेव ! तुम मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् दिग्गजों (हाथियों) के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना (आर्द्र शरीरवाली) पुष्टि को देनेवाली अथवा पुष्टिरूपा रक्त और पीतवर्णवाली, कमल की माला धारण करनेवाली, संसार को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ॥ १३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४॥

हे अग्निदेव ! तुम मेरे घर में भक्तों पर सदा दयार्द्रचित्त अथवा समस्त भुवन जिसकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली अथवा यष्टिवत् अवलम्बनीया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(सारांश यह है कि– जिस प्रकार लकड़ी के बिना असमर्थ पुरुष चल नहीं सकता, उसी प्रकार लक्ष्मी के बिना संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता), सुन्दर वर्णवाली एवं सुवर्ण की माला वाली सूर्यरूपा (अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत का पालन-पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी, ज्ञान और धन के द्वारा संसार का पालन-पोषण करती है) अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ ॥ १४ ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५ ॥

हे अग्निदेव ! तुम मेरे यहाँ उन जगद्विख्यात लक्ष्मी को जो मुझे छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली हों, उन्हें बुलाओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात् स्थिर लक्ष्मी को प्राप्त करूँ॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

जो मनुष्य लक्ष्मी की प्राप्ति की कामना करता हो, वह पवित्र और सावधान होकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिदिन अग्नि में गोघृत का हवन और साथ ही श्रीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करें ॥ १६॥

इति सरला-हिन्दी भाषायुतं ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं समाप्तम्।

हिन्दी भाषाकार :- वेदाचार्य श्री उमेश मिश्र गौडः

रुद्रयामलोक्त-श्रीसूक्तस्य सम्पुट पुरश्चरणविधिः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ही श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ तां म ऽआ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।। २ ।।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।। ३ ।।

दारिद्र्यदुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।। ४ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये ऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामअलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयिः श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १३ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १४ ॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६॥

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

इति रुद्रयामले शिवपार्वतीसंवादे श्रीसूक्तस्य पुरश्चरणविधिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पुराणोक्तं श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णां हिमरौप्यहारां चन्द्रां त्वदीयां च हिरण्यरूपाम् ।
लक्ष्मीमृगीरूपधरां श्रियं त्वं मदर्थमाकारय जातवेदः ॥१॥

यस्यां सुलक्ष्म्यामहमागतायां हिरण्यगोऽश्वात्मज मित्रसाहान् ।
लभेयमाशु ह्यनपायिनीं मां मदर्थमाकारय जातवेदः ॥२॥

प्रत्याह्वयेतामहमश्वपूर्वां देवीं श्रियं मध्यरथादियुक्ताम् ।
प्रबोधिनीं हस्तिसुबृंहितेनाहूता मया सा किल सेविता वै ॥३॥

कां सोस्मितां तामिह पद्मवर्णामार्द्रां सुवर्णां वरणां ज्वलन्तीम् ।
तृप्तां हि भक्तानथ तप्रयन्तीमुपह्वयेऽहं कमलासनस्थाम् ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोके ज्वलन्तीं यशसा प्रभासां चन्द्रामुदारामुत देवजुष्टाम् ।
तां पद्मरूपां शरणं प्रपद्ये प्रियं वृणे त्वां व्रजतामलक्ष्मीः ॥ ५॥

वनस्पतिस्ते तपसोऽर्धजातो वृक्षोऽथ बिल्वस्तरुणार्कवर्णे ।
फलानि तस्य त्वदनुग्रहेण माया अलक्ष्मीश्च नुदन्तु बाह्याः ॥ ६॥

उपैतु मां देवसखः कुबेर सा दक्षकन्या मणिना च कीर्तिः ।
जातोऽस्मि राष्ट्रे किल मर्त्यलोके कीर्तिं समृद्धिं च ददातु मह्यम् ॥ ७॥

क्षुत्तृट्कृशाङ्गीं मलिनाम अलक्ष्मीं तवाग्रजातामुत नाशयामि ।
सर्वामभूतिं ह्यसमृद्धिमम्ब गृहाच्च निष्कासय मे द्रुतं त्वम् ॥ ८॥

केनाप्यधृष्यामथ गन्धचिह्नां पुष्टां गवाश्वादियुतां च नित्यम् ।
पद्मालये सर्वजनेश्वरीं तां प्रत्याह्वयेऽहं खलु मत्समीपम् ॥ ९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लभेमहि श्रीर्मनसश्च कामं वाचस्तु सत्यं च सुकल्पितं वै ।
अन्नस्य भक्ष्यंच पयः पशूनां सम्पद्धिमय्याश्रयतां यशश्च ॥१०॥

मयि प्रसादं कुरु कर्द्रम त्वं प्रजावती श्रीरभवत्त्वया हि ।
कुले प्रतिष्ठापय मे श्रियं वै त्वन्मातरं तामुत पद्ममालाम् ॥ ११ ॥

स्निग्धानि चापोऽभिसृज त्वजस्रं चिक्लीत वसि कुरु मद्गृहे त्वम् ।
कुले श्रियं मातरमाशु मेऽद्य श्रीपुत्रसंवासयतां च देवीम् ॥ १२ ॥

तां पिङ्गलां पुष्करिणीं च लक्ष्मीमार्द्रां च पुष्टिं शुभपद्ममालाम् ।
चन्द्रप्रकाशां च हिरण्यरूपां मदर्थमाकारय जातवेदः ॥ १३ ॥

आर्द्रां तथा यष्टिकरीं सुवर्णां तां यष्टिरूपामथ हेममालाम् ।
सूर्यप्रकाशांश्च हिरण्यरूपां मदर्थमाकारय जातवेदः ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यस्यां प्रभूतं कनकं च गावो दासीस्तुरङ्गान् पुरुषांश्च सत्याम् ।
विन्देयमाशु ह्यनपायिनीं तां मदर्थमाकारय जातवेदः ॥ १५॥

श्रियः पश्चदशश्लोकं सूक्तं पौराणमन्वहम् ।
यः पठेज्जुहुयाच्चाज्यं श्रीयुतः सततं भवेत् ॥१६॥

इति पुराणोक्तं श्रीसूक्तम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मी-सूक्त

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मंमयि सन्निधत्स्व ॥१॥

हे विश्व की प्यारी लक्ष्मीजी ! आप पद्मनना है पद्मनि हैं, पद्मवाहिनी हैं, पद्मप्रिया हैं, पद्मवल सदृंश आपके नयन हैं। आप विश्व की प्यारी और विश्वम्भर के मनोनुकूल हैं, आपके पाद पद्म मेरे हृदय में सदा विराजित रहें।

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसिं पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ २॥

हे पद्मानने ! लक्ष्मी देवि ! आपका श्रीमुख पद्म सरिस है, ऊरु पद्म समान तथा नेत्र भी पद्म सदृश हैं आप पद्म से पैदा हुई हैं। अतः हे पद्माक्षि ! मेरे ऊपर दया दृष्टि कीजिये जिससे मैं सुख को प्राप्त होऊँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुष तां देवि सर्वान्कामाँश्च देहि मे ॥ ३॥

हे महाधने लक्ष्मी माँ ! आप घोड़ा, गौ और सब प्रकार के धन देने में समर्थ हो। देवि ! मुझे धन दीजिये और मेरी समस्त कामनाओं को पूर्ण कीजिये।

पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥ ४॥

हे भगवति ! तुम सब प्रजा की माता हो। मेरे यहाँ पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, हाथी, घोड़ा, गौ, बैल, रथ आदि सदा सम्पन्न रहें और मुझे बड़ी आयु वाला बना दें।

धनमग्नि धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसु ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणां धनमस्तु मे ॥ ५॥

अग्नि धन है, वायु धन है, सूर्य धन है, जल धन है, इन्द्र धन हैं, बृहस्पति धन हैं, वरुण-धन हैं। ये सब मुझे प्राप्त होवें। इनके द्वारा मुझे धन मिले।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैनतेय सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ ६॥

गरुड़जी सोम पान करें, वृत्रासुर को मारने वाले इन्द्र भी सोम पान करें। ये सोमपायी मुझे सोमयुक्त धन प्रदान करें।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः ।
भवन्ति कृतपुणयानां भक्तानां सूक्त जापिनाम् ॥ ७॥

जो इस सूक्त का पाठ करने वाले पुण्यात्मा भक्त हैं, उनकी क्रोध, मत्सरता, लोभ तथा पाप कर्मों में मति नहीं होती है।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिबल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम् ॥ ८॥

हे भगवति हरिवल्लभे लक्ष्मी माता ! कमल आपका निवास स्थान है, आप कर में कमल लिये रहती हो। आप अति स्वच्छ धवल वस्त्र, चन्दन और माला धारण किये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहती हो। तुम सबके मन की बातें जानती हो, त्रिभुवन की सम्पदा प्राप्त करने वाली हो। मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाइये।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ ९॥

जो माता लक्ष्मी देवी विष्णु की पत्नी हैं, क्षमा स्वरूपा हैं, माधव भगवान् की प्यारी हैं, सबकी सुहृदा हैं, उन अच्युत वल्लभा को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१०॥

मैं उन महादेवी को जानता हूँ, उन विष्णु भगवान की पत्नी का ध्यान करता हूँ, वे लक्ष्मीजी हमें धर्म कार्यों में प्रेरित करें, हम पर दया दृष्टि रखें।

चन्द्रप्रभां लक्ष्मीमैशानीं सूर्या भांलक्ष्मीमैश्वरीम् ।
चन्द्र सूर्याग्निसंकाशां श्रियं देवीमुपास्महे ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो चन्द्र प्रभा के सदृश हैं, जो शङ्कर की लक्ष्मी हैं जो सूर्य के सदृश प्रकाशवती हैं, हम ऐसी उन भगवती लक्ष्मी देवी की उपासना करते हैं जो सूर्य चन्द्र और अग्नि के सदृश प्रकाशवती हैं।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्य माभिधाच्छ्रोभमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहु पुत्रलाभम् शतसम्वत्सरं दीर्घमायु : ॥ १२॥

इस लक्ष्मी सूक्त का नित्य पाठ करने वाला भक्त श्री, तेज, आयु, आरोग्य को धारण करता हुआ शोभा को प्राप्त करता है। वह धन, धान्य, पशु और बहु पुत्र लाभ करके सौ वर्ष की दीर्घ आयु को प्राप्त करता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री धनदा यन्त्रम्

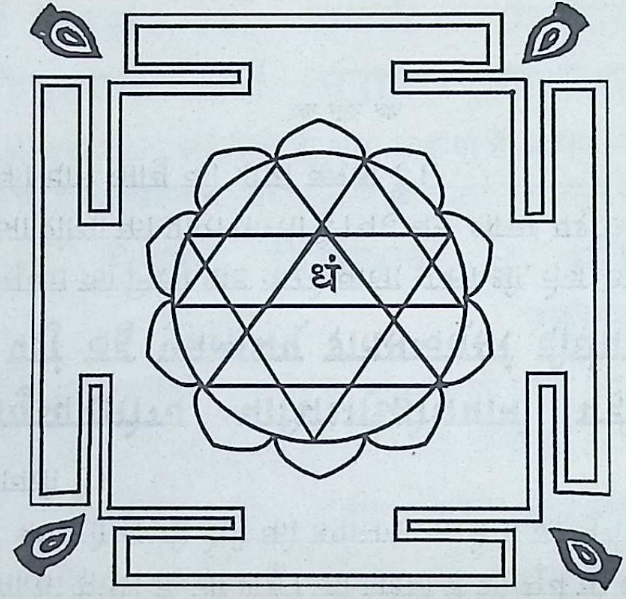

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ धनदालक्ष्मीस्तोत्रम्।

धनद उवाच

देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं मम प्रियम्।
कृपया पार्वती प्राह शङ्करं करुणाकरम्॥ १॥

देव्युवाच

ब्रूहि वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुम्बिनाम्।
दरिद्र-दलनोपायमञ्जसैव धनप्रदम्॥ २॥

शिव उवाच

पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः।
उचितं जगदम्बासि तव भूतानुकम्पया॥ ३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स-सीतं सानुजं रामं साञ्जनेयं सहानुगम् ।
प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्येऽहं स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४॥

धनदं श्रद्धधानानां सद्यः सुलभकारकम् ।
योगक्षेमकरं सत्यं सत्यमेव वचो मम ॥ ५॥

पठन्तः पाठयन्तोऽपि ब्रह्मणैरास्तिकोत्तमैः ।
धनलाभो भवेदाशु नाशमेति दरिद्रता ॥ ६॥

भूभवांशभवां भूत्यै भक्तिकल्पलतां शुभाम् ।
प्रार्थयेत्तां यथाकामं कामधेनुस्वरूपिणीम् ॥ ७॥

धनदे धनदे देवि दानशीले दयाकरे ।
त्वं प्रसीद महेशानि ! यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ॥ ८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धाराऽमरप्रिये पुण्ये धान्ये धानदपूजिते ।
सुधनं धार्मिके देहि यजमानाय सत्त्वरम् ।। ९ ।।

रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रतिप्रिये ।
शिखीसखमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ।। १० ।।

आरक्त-चरणाम्भोजे सिद्धि-सर्वार्थदायिके ।
दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्यमाल्यानुशोभिते ।। ११ ।।

समस्तगुणसम्पन्ने सर्वलक्षणलक्षिते ।
शरच्चन्द्रमुखो नीले नील-नीरज-लोचने ।। १२ ।।

चञ्चरीक-चमू-चारु-श्रीहार-कुटिलालके ।
मत्तो भगवती मातः कलकण्ठरवामृते ।। १३ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हासाऽवलोकनैर्द्दिव्यैर्भक्तचिन्तापहारिके ।
रूप-लावण्य-तारुण्य-कारुण्य-गुणभाजने ॥१४॥

क्वणत्कङ्कणमञ्जीरे लसल्लीलाकराम्बुजे ।
रुद्रप्रकाशिते तत्त्वे धर्माधारे धरालये ॥१५॥

प्रयच्छ यजमानाय धनं धर्मैकसाधनम् ।
मातस्त्वं मेऽविलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके ॥१६॥

कृपया करुणागारे प्रार्थितं कुरु मे शुभे ।
वसुधे वसुधारूपे वसु-वासव-वन्दिते ॥१७॥

धनदे यजमानाय वरदे वरदा भव ।
ब्रह्मण्यैर्ब्राह्मणैः पूज्ये पार्वतीशिवशङ्करे ॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्रं दरिद्रताव्याधिशमनं सुधनप्रदम् ।
श्रीकरे शङ्करे श्रीदे प्रसीद मयि किङ्करे ॥१९॥

पार्वतीशप्रसादेन सुरेश-किङ्करेरितम् ।
श्रद्धया ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति भक्तितः ॥२०॥

सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद् ध्रुवम् ।
धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च ।
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धन-धान्यादिसम्पदः' ॥२१॥

इति धनदालक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

---

१. शिवालये कदलीवने वा पश्चिमाभिमुखलिङ्गाश्रितवृक्षसमीपे देव्यालयेबिल्वमूले वा हविष्याशी सन् ब्रह्मचर्यादिनियमं विधाय प्रत्यहं धनदालक्ष्मीस्तोत्रस्य शतावर्त्तनानि कुर्यात्। यथोक्तसंख्याचतुष्टये कृते धनदालक्ष्मीर्वश्या भवति। उक्तसंख्याकं धनं च प्रयच्छति। अब्दमध्ये सिद्धिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ धनदास्तोत्रम्।

शिव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि धनदास्तोत्रमुत्तमम् ।
यथोक्तं सर्वतन्त्रेषु इदानीं तत् प्रकाशितम् ॥
नमः सर्वस्वरूपेण नमः कल्याणदायिके ।
महासम्पत्प्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तु ते ॥ १॥

महाभोगप्रदे देवि महाकामप्रपूरिते ।
सुखमोक्षप्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तु ते ॥ २॥

ब्रह्मरूपे सदानन्दे सदानन्दस्वरूपिणि ।
द्रुतसिद्धिप्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तु ते ॥ ३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उद्यत्सूर्यप्रकाशाभे उद्यदादित्यमण्डले ।
शिवतत्त्वप्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तु ते ॥४॥

विष्णुरूपे विश्वमते विश्वपालनकारिणि ।
महासत्वगुणाक्रान्ते धनदायै नमोऽस्तु ते ॥५॥

शिवरूपे शिवानन्दे कारणानन्द-विग्रहे ।
विश्वसंहाररूपे च धनदायै नमोऽस्तु ते ॥६॥

पञ्चतत्त्वस्वरूपे च पञ्चाचार-सदारते ।
साधकाभीष्टदे देवि धनदायै नमोऽस्तु ते ॥७॥

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तं साधकाभीष्टदायकम् ।
यः पठेत् पाठयेद्वापि स लभेत् सकल फलम् ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स्तोत्रमेतत् समाहितः।
स सिद्धिं लभते शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥९॥

इदं रहस्यं परमं स्तोत्रं परमदुर्लभम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ॥१०॥

अप्रकाश्यमिदं देवि गोपनीयं परात्परम्।
प्रपठेन्नात्र सन्देहो धनवान् जायतेऽचिरात् ॥११॥

इति धनदास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ धनदादेवीस्तोत्रम्

शिव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि धनदां सर्वसिद्धिदाम् ।
यामाराध्य महादेवि कुवेरो धननायकः ॥ १ ॥

दान्तं विन्दुसमारूढं महामायां हरिप्रियाम् ।
रतिप्रिये ततः पश्चाद् वह्निजायां ततः प्रिये ॥ २ ॥

नवाक्षरो महामन्त्रो द्रुतं सिद्धिप्रदायकः ।
कुवेरोऽस्य ऋषिः प्रोक्तः पङ्क्तिश्छन्द उदाहृतम् ॥ ३ ॥

देवता धनदा देवी सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
धर्मार्थ काममोक्षाख्यश्चतुर्वर्ग फलप्रदा ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षड्दीर्घमायया चैव षडङ्गन्यासमाचरेत् ।
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि येन सिद्धी भवेन्नरः ॥५॥

ॐ देवीं काञ्चनकान्तिकायविमलां रक्तां शुकाच्छादितां
हेमाम्भोजयुगाभयाङ्कुशकरीं रत्नोल्लसत्कुण्डलाम् ।
सर्वाभीष्टफलप्रदां त्रिनयनां नागेन्द्रहारोज्ज्वलां
वन्दे सर्वभयापहां त्रिजगतां पापापहारीं पराम् ॥६॥

स्वकीयात्मस्वरूपां तां भावयेच्चित्स्वरूपिणीम् ।
एवं ध्यात्वा महेशानि मानसः पूजनं चरेत् ॥७॥

अर्घ्यपात्रं स्थापयित्वा धेनुयोनिं प्रदर्शयेत् ।
पीठपूजां ततः कृत्वा ततः पीठन्तु संजपेत् ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आधारशक्तिमारभ्य यजेत्पद्मासनं प्रिये ।
प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत्साधकाग्रणीः ॥९॥

पुनर्ध्यात्वा महेशानि मूलेनावाहनं चरेत् ।
षड्ङ्गेन च सम्पूज्य जीवन्यासं समाचरेत् ॥१०॥

देवायै च ततः पश्चाद्योगात्मकमनुस्मरेत् ।
नवयोन्यात्मकं चक्रं विलिखेत् कर्णकोपरि ॥११॥

द्विदलं पद्ममालिख्य चतुरस्रं ततो बहिः ।
कोणेषु वज्रं संलिख्य मध्ये बीजं समुल्लिखेत् ॥१२॥

इदं यन्त्रं महेशानि साक्षाद् देवीस्वरूपकम् ।
लक्ष्मीं पद्मां पद्मालयां श्रियं चैव हरिप्रियाम् ॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शङ्खां तु कमलां चैव अब्जां च चञ्चलां तथा ।
लोलां च प्रणवाद्येता नमोऽन्तेन प्रपूजयेत् ॥१४॥

पुनर्मध्ये ततो देवीं देव्या हस्ते समर्पयेत् ।
प्राणायामं ततः कृत्वा प्रणामाष्टाङ्गमाचरेत् ॥१५॥

अथोत्थाय महेशानि विशेषार्घ्यं निवेदयेत् ।
आत्मसमर्पणं कृत्वा विहरेच्च निजेच्छया ॥१६॥

इति धनदादेवीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ अथ धनदाकवचम्। ❁

देव्युवाच

धनदा या महाविद्या कथिता न प्रकाशिता ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ॥ १॥

शिव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं मन्त्रविग्रहम् ।
सारात्साररतरं देवि कवचं मन्मुखोदितम् ॥ २॥

धनदा कवचस्यास्य कुवेर ऋषिरीरितः ।
पङ्क्तिश्छन्दो देवता च धनदा सिद्धिदा सदा ॥ ३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ध्रं वीजं मे शिरः पातु ह्रीं वीजं मे ललाटकम् ॥ ४॥

श्रीं वीजं मे मुखं पातु रकारं हृदि मेऽवतु ।
तिकारं पातु जठरं प्रिकारं पृष्ठतोऽवतु ॥ ५॥

येकारं जङ्घयोर्युग्से स्वाकारं पादयोर्युगे ।
शीर्षादिपादपर्यन्तं हाकारं सर्वतोऽवतु ॥ ६॥

इत्येतत्कथितं कान्ते कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि ॥ ७॥

शतवर्ष सहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
गुरुपूजां विना देवि नहि सिद्धिः प्रजायते ॥ ८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुरुपूजात्परो भूत्वा कवचं प्रपठेत्ततः ।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विचरेद् भैरवो यथा ॥ ९ ॥

प्रातःकाले पठेद्यस्तु मन्त्राजापपुरः सरम् ।
सोऽभीष्टफलमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १० ॥

पूजाकाले पठेद्यस्तु देवीं ध्यात्वा हृदम्बुजे ।
षण्मासाभ्यन्तरे सिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा ॥ ११ ॥

सायङ्काले पठेद्यस्तु स शिवो नात्र संशयः ।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥ १२ ॥

पुरुषो दक्षिणे वाहौ योषिद्वामभुजे तथा ।
सर्वसिद्धियुती भूत्वा धनवान् पुत्रवान् भवेत् ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्धनदां शुभे।
शस्त्रघातमवाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥१४॥

कवचेनावृतो नित्यं यो हि यत्रैव गच्छति।
तत्रैव स महादेवि सम्पूज्यो नात्र संशयः ॥१५॥

इति धनदाकवचं सम्पूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री महालक्ष्मी यंत्रम्

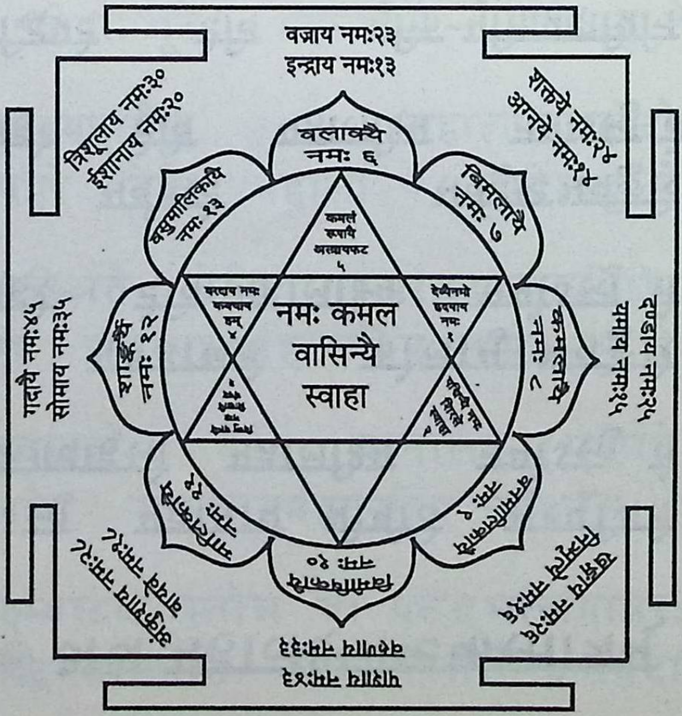

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रम्

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति-मुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगस्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धन-धान्यसमन्वितः ॥१०॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री कनकधारा यंत्रम्

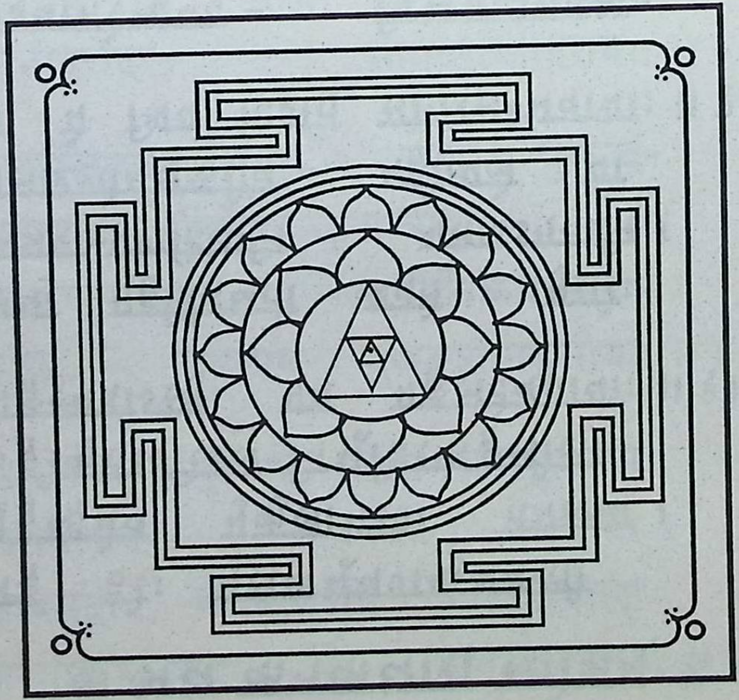

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ कनकधारा स्तोत्रम्

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताऽखिल-विभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपा-प्रणहितानि गताऽऽगतानि ।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

विश्वामरेन्द्रपद - विभ्रमदानदक्ष-
मानन्द-हेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध-
मिन्दीवरोदर- सहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थित- कनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रित कौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ६॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थर-मीक्षणार्धं
मन्दाऽलसञ्च मकरालय-कन्यकायाः ॥ ७॥

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा
मस्मिन्नकिञ्चन विहङ्गशिशौ विषण्णे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुष्कर्म-धर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण-प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥८॥

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजभामिनीति
शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति ।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-सिद्धिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रुत्यै नमस्त्रिभुवनैक-फलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणाश्रयायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥ ११ ॥

नमोऽस्तु नालीक-निभेक्षणायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ॥ १२ ॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि
साम्राज्यदान-विभवानि सरोरुहाक्षि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यत् ॥ १३॥

यत्कटाक्ष- समुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः ।
सन्तनोति वचनाऽङ्गमानसै-
स्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे ॥ १४॥

सरसिज-निलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुक- गन्ध- माल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ १५॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनीविमलचारु- जलप्लुताङ्गीम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिराजगृहिणीम मृताब्धिपुत्रीम् ॥ १६ ॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१७॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुधन-भोगभागिनो
भवन्ति ते भुविबुधभाविताशयाः ॥१८॥

श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचितं कनकधारास्तोत्रं समाप्तम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋणमोचकमङ्गलयंत्र

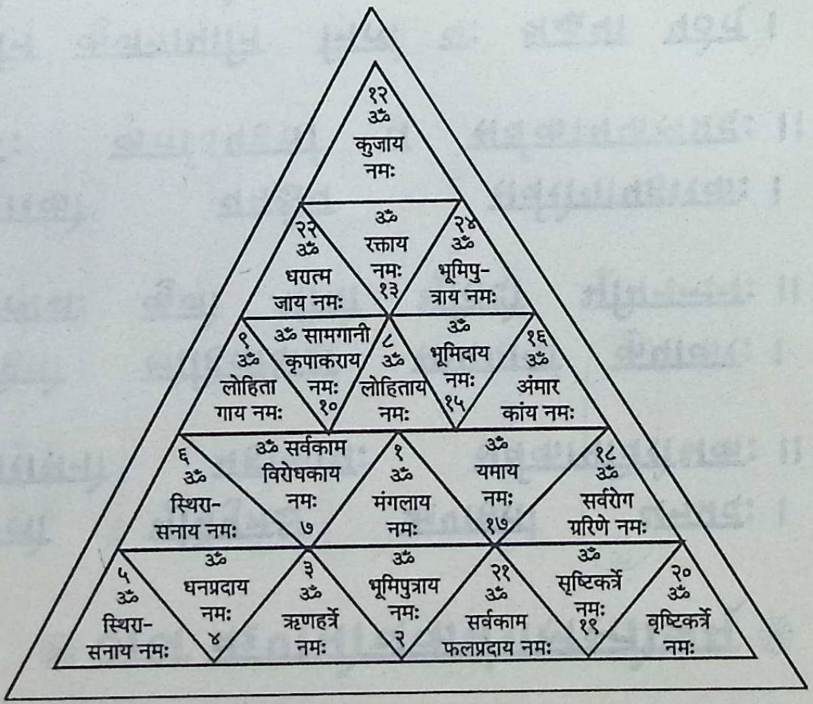

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ अथ ऋणमोचकमंगलस्तोत्रम् ❀

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकामविरोधकः ॥ १ ॥

लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥ २ ॥

अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥ ३ ॥

एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥५॥

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पापि भवति क्वचित् ॥६॥

अङ्गारक महाभाग भगवन् भक्तवत्सल ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये चापमृत्यवः ।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥

अतिवक्रदुराराध्यभोगमुक्तजितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विरिञ्चशक्रविष्णुनां मनुष्याणां तु का कथा ।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः ॥ १० ॥

पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥ ११ ॥

एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्य : स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥ १२ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ ऋणहर्तागणेशस्तोत्रम्

कैलाशपर्वते रम्ये शम्भुं चन्द्रार्धशेखरम् ।
षडाम्नायसमायुक्तं पप्रच्छ नगकन्यका ॥

पार्वत्युवाच

देवेश परमेशान सर्वशास्त्रार्थपारग ।
उपायमृणनाशस्य कृपया वद साम्प्रतम् ॥

शिव उवाच

सम्यक् पृष्टं त्वया भद्रे लोकानां हितकाम्यया ।
तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीऋणहरणकर्तृगणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीऋणहरणकर्तृगणपतिर्देवता, ग्लौं बीजम्, गः शक्तिः, गों कीलकम्, मम सकलर्णनाशने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ सदाशिवर्षये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीऋणहर्तृगणेश देवतायै नमः हृदि। ग्लैं बीजाय नमः गुह्ये (मूलाधारे)। गः शक्तये नमः पादयोः। गों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः

'ॐ गणेश' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। 'ऋणं छिन्धि' तर्जनीभ्यां नमः। 'वरेण्यम्' मध्यमाभ्यां नमः। 'हुम्' अनामिकाभ्यां नमः। 'नमः' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। 'फट्' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

'ॐ गणेश' हृदयाय नमः। 'ऋणं छिन्धि' शिरसे स्वाहा। 'वरेण्यम्' शिखायै वषट्। 'हुं' कवचाय हुम्। 'नमः' नेत्रत्रयाय वौषट्। 'फट्' अस्त्राय फट्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्

सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् ।
ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ॥

स्तोत्रपाठः

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥ १ ॥

त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥ २ ॥

हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥४॥

तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥५॥

भास्करेण गणेशस्तु पूजितश्छविसिद्धये ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥६॥

शशिना कान्तिसिद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥७॥

पालनाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं त्वृणहरं स्तोत्रं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ।
एकवारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः ॥९॥

दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुबेरसमतां व्रजेत् ।
'फडन्तोऽयं महामन्त्रः सार्धपञ्चदशाक्षरः ॥१०॥

---

१. मन्त्रः 'ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुँ नमः फट्।'

अस्यैवायुतसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ।
सहस्रावर्तनात् सद्यो वाञ्छितं लभते फलम् ॥
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं स्मृतिमात्रतः ॥११॥

इति श्रीकृष्णयामलतन्त्रागत-उमामहेश्वरसंवादे ऋणहर्तागणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ [ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र के अन्त में 'ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्' इस ऋणहर्ता महामन्त्र का एक बार जप करने से पाठकर्ताका अन्तःकरण पवित्र हो जाता है। इक्कीस संख्या में इसका पुरश्चरण बताया गया है। छः महीने तक प्रतिदिन उक्त मन्त्र का एक हजार जप करने से मनुष्य गणेशजी का प्रिय बन जाता है। वह ज्ञान में बृहस्पति और धन में कुबेर के सदृश हो सकता है। इसका एक पुरश्चरण दस हजार जप का बताया गया है। एक लाख जप करने से भलीभाँति मनोऽभिलषित फल की प्राप्ति हो सकती है।]

❁ अथ ऋणमुक्तिगणेशस्तोत्रम् ❁

अस्य श्रीऋणविमोचनमहागणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य शुक्राचार्य ऋषिः, ऋणविमोचन महागणपतिर्देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ऋणविमोचनमहागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ स्मरामि देवदेवेशं वक्रतुण्डं महाबलम्।
षडक्षरं कृपासिन्धुं नमामि ऋणमुक्तये ॥ १॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महागणपतिं वन्दे महासेतुं महाबलम् ।
एकमेवाद्वितीयं तु नमामि ऋणमुक्तये ।। २ ।।

एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रह्म सनातनम् ।
महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋणमुक्तये ।। ३ ।।

शुक्लाम्बरं शुक्लवर्णं शुक्लगन्धानुलेपनम् ।
सर्वशुक्लमयं देव नमामि ऋणमुक्तये ।। ४ ।।

रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्तगन्धानुलेपनम् ।
रक्तपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये ।। ५ ।।

कृष्णाम्बरं कृष्णवर्णं कृष्णगन्धानुलेपनम् ।
कृष्णयज्ञोपवीतं च नमामि ऋणमुक्तये ।। ६ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पीताम्बरं पीतवर्णं पीतगन्धानुलेपनम् ।
पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये ॥७॥

[1]सर्वात्मकं सर्ववर्णं सर्वगन्धानुलेपनम् ।
सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये ॥८॥

---

१. धूम्राक्षं धूम्रवर्णं धूम्रगन्धानुलेपनम्। धूम्रपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये॥
सर्वसर्वात्मकं सर्वं सर्वगन्धानुलेपनम्। सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये॥

एतद् ऋणहरं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
षणमासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशयः ॥९॥

सहस्रदशकं कृत्वा ऋणमुक्तो धनी भवेत् ॥१०॥

इति रुद्रयामले ऋणमुक्तिगणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेश लक्ष्मी यंत्र

शुभ

८	१	६
३	५	७
४	९	२

लाभ

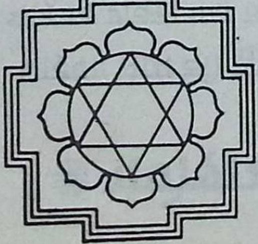

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ गणेशस्तवन से लक्ष्मी की वृद्धि ❁

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की गणेशचतुर्थी के दिन से प्रारम्भ कर दूसरे वर्ष की भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक पूरे बारह मास प्रतिदिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर एक धोती और एक उत्तरीय वस्त्र डुपट्टा ओढ़कर किसी एकान्त कमरे में पवित्र आसन पर बैठकर गणेशजी का ध्यान करते हुए १०८ दानोंवाली चन्दन की माला से सात बार तुलसीदासकृत रामायण के इस स्तोत्र का जप करना चाहिए।

गाइये गनपति जगबंदन। संकर-सुवन भवानी-नंदन ॥
सिद्धि-सदन, गज-बदन बिनायक। कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ॥

मोदक-प्रिय मुद-मंगलदाता। विद्यावारिधि बुद्धि-विधाता ॥
मांगत तुलसिदास कर जोरे। बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह स्तोत्र लगभग दस सेकेण्ड में पूर्ण हो जाता है और इस प्रकार २० मिनट में एक मालाका जप हो जाता है। सात माला में प्रतिदिन ७५६ बार जप होता है, जो एक वर्ष में करीब अढ़ाई लाख हो जाता है–

जो सज्जन श्रद्धा-विश्वास से उपर्युक्त स्तोत्र का जप लगातार एक वर्ष तक करते हैं, वे अवश्य ही दरिद्रता से मुक्त होकर धनवान बन जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋणमुक्ति के लिये कुछ प्रयोग

१–अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम ।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम ॥
(अथर्ववेद ६-११७-३)

इस मन्त्र का कम से कम सवा लक्ष जप करने से ऋणमुक्ति हो जाती है।

२–अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम ।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम ॥
(अथर्ववेद ६-११७-३)

इस मन्त्र का सम्पुष्ट देकर श्री दुर्गा सप्तशती की चण्डी कराने से ऋण दूर हो जाता है।

३–अपमित्यमप्रतीतं यदस्मि यमस्य येन बलिना चरामि ।
इदं तदग्ने अनृणो भवामि त्वं पाशान् विचृतं वेत्थ सर्वान् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इहैव सन्तः प्रति दद्मा एनज्जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत् ।
अपमित्य धान्यं१ यज्जघसाहमिदं तदग्ने अनृणो भवामि ॥

अनृणा, अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम ।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः स्र्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम् ॥

(अथर्ववेद ६-११७-३)

यद्धस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाण्यक्षाणां गत्नुमुपलिप्समानाः।
उग्रंपश्ये उग्रजितौ तदद्याप्सरसावनु दत्तामृणं नः॥

उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत् किल्बिपाणि यदक्षवृत्तमनु दत्तं न एतत्।
ऋणान्नो नर्णमेर्त्समानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत्॥

यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवा।
ते वाचं वादिषुर्मोत्तरां मद्देवपत्नी अप्सरसावधीतम्॥

(अथर्ववेद ६-११८-३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यददीव्यन्नृणमहं कृणोम्यदास्यन्नग्न उत संगृणामि।
वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम्॥

वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु।
स एतान् पाशान् विचृतं वेद सर्वानथ पक्वेन सह सं भवेम॥

वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संगरमभिधावाम्याशाम्।
अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि॥

(अथर्ववेद ६-११९-३)

अथर्ववेद के छठवें काण्डके ११७, ११८ और ११९ इन तीन सूक्तोंके सम्पूर्ण मन्त्रों का प्रतिदिन पाठ करने से ऋणमुक्ति हो जाती है।

४. कुशकी जड़, विल्वका पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) और सिन्दूर- इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दनकी पीठिका पर निम्नलिखित मन्त्र को लिखें—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः मम ऽलक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा।'

पश्चात् पञ्चोपचार से पूजन करके गोघृतके द्वारा ४४ दिन तक प्रतिदिन सात बार हवन करें। मन्त्र की जप संख्या कम से कम १०००० है, जो ४४ दिनमें पूरी होनी चाहिये। ४३ दिन तक प्रतिदिन २२८ मन्त्र का जप होना चाहिये और ४४ वें दिन १९६ मन्त्रका जप होना चाहिये। अनन्तर १००० मन्त्रका जप दशांश के रूप में करना चाहिये।

५– **'ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्।'**

इस ऋणहर्ता गणेश-मन्त्रका एक वर्ष तक लगातार ग्यारह सौ बार जप करना चाहिये।

६- काशी में महामृत्युञ्जय मन्दिर (मध्यमेश्वर गली) के पास बहुत ही प्राचीन और प्रत्यक्ष फलप्रद 'ऋणहरेश्वर मन्दिर' है। इनका सवा वर्ष तक प्रतिदिन दर्शन करने से और इनके सामने ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र का प्रतिदिन ११ बार पाठ करने से निश्चित ही ऋण से मुक्ति हो जाती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७– वाराणस्यामुत्तरे तु सुमन्तुर्नामि वै द्विजः ।
तस्य स्मरणमात्रेण निर्धनो धनवान् भवेत् ॥

इस मन्त्रका १०८ दाने की माला से प्रतिदिन ११ बार जप करना चाहिये। यह जप कमसे कम १। वर्ष तक करना आवश्यक है।

लक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये कुछ प्रयोग

१– कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता ।
तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः ॥

इस मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार अथवा ११ माला जप करना चाहिये। अढ़ाई लाख जप पूर्ण होने पर कमल का पुष्प, श्वेत दूर्वा, गूगल, गोघृत-इस सब चीजों को मिलाकर दशांश हवन करने से लक्ष्मी की विशेष प्राप्ति होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२– ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिये। अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर-

ॐ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते॥

इस मन्त्र का पाठ करना चाहिये।

३–ॐ श्रीं श्रियै नमः मह्यं श्रियं देहि देहि दापय दापय स्वाहा।

इस मन्त्र से वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिये। इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीवाली की रात्रि में दीपक जल जाने के बाद प्रारम्भ करना चाहिये।

इस अनुष्ठान की विधि इस प्रकार है कि ८ दिनों तक प्रतिदिन वाल्मीकि रामायण के सात सर्ग का और नवें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नवें दिन पाठ पूरा करना चाहिये। अथवा प्रतिदिन सात, पांच, तीन या एक सर्ग का पाठ करके अड़सठ दिनों में सात, तीन अथवा एक पाठ करना चाहिये। ऐसा करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मा सर्वसम्पदं देहि देहि मम अलक्ष्मीं नाशय नाशय हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण अथवा दीपावली की रात्रि में १००८ बार जप करके सर्वप्रथम मन्त्रको सिद्ध कर लेना चाहिये। पश्चात् उपर्युक्त मन्त्र से १००८ बार घृत की आहुति देनी चाहिये। ऐसा करने से मनुष्य की दरिद्रता दूर हो जाती है और वह अत्यन्त लक्ष्मीवान् बन जाता है।

५– इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽ अस्मिन्ननातुरम्॥४८॥

(शुक्लयजुर्वेद १६/४८)

इस मन्त्र से तीन वर्ष तक प्रतिदिन तिल से ११०० बार हवन करने से लक्ष्मी की विशेष प्राप्ति होती है।

६– इमं ꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये।
उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियं ꣳ सदनमा विशस्व॥

(शुक्ल. १७/८७)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस मन्त्र का १०००० बार जप गङ्गा में प्रविष्ट होकर करना चाहिये। जब जप पूर्ण हो जाय, तब उपर्युक्त मन्त्र से आठ हजार बार हवन करने से लक्ष्मी की विशेष प्राप्ति होती है।

७- इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥

(यजुर्वेद ३२/१६)

इस मन्त्र का प्रतिदिन ११ माला जप करने से विपुल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

८- पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे-भवत्सरित्॥

(यजुर्वेद ३४/११)

इस मन्त्र से तिल द्वारा पाँच लाख हवन करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

९-ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै
सिंहवाहिन्यै स्वाहा।

इस मन्त्र का ११०० बार जप लगातार तीन वर्ष करने से विशेष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ व्यापार उन्नति के लिये महत्त्वपूर्ण यन्त्र ❁

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
४	५	७५	७८

उपयुक्त यन्त्र को लाल वस्त्र पर अष्टगन्ध (सफेद चन्दन, रक्त चन्दन, केशर, कस्तूरी, कपूर, अगर, तगर और कुङ्कुम) से गुरुवार को लिखकर अपने दाहिने हाथ में रखें, तो व्यापार में लाभ होता है।

❁ दुकान में बिक्री वृद्धि के लिये विशिष्ट मन्त्र ❁

रविवार को काले उड़द लेकर उन पर २१ बार नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़कर उनको अपनी दुकान में चारों तरफ डाल दें। इस प्रकार लगातार तीन रविवार को करने से बिक्री बढ़ जायगी।

मन्त्र :

भंवरवीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा ।
उठे जो डण्डी बिकै जो माल, भंवरवीर सीखे नहीं जाये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवनिधिनाथ कुबेर

वैवस्वत मन्वंतर में महर्षि पुलस्त्य हुये हैं। उनके पुत्र का नाम विश्रवण था। उसके कोशिनी व इडविडा नाम की दो पटरानियां थीं। केशनी की शूप्रणखा, रावण, कुम्भकर्ण व विभिषण चार सन्तानें थीं। इडविडा की एक मात्र संतान कुबेर था। इस प्रकार रावण व कुबेर सौतेले भाई थे।

कुबेर का पेट विशाल, रंग काला, नाटा कद व दीखने में कुरूप हैं। मिठाई मदिरा इनको अति प्रिय हैं। जनश्रुति है कि धन प्राप्ति हेतु जहां अन्य प्रयत्न व उपासना निष्फल हो जातीं है वहां कुबेर की पूजा शीघ्र फलदायी होती है। धनतेरस कुबेर पूजा का विशेष दिन माना जाता है। कुबेर शिव के परम उपासक हैं। अतः शिव भक्त पर शीघ्र कृपा करते हैं। कुबेर उत्तर दिशा के स्वामी हैं। अतः उत्तर दिशा की ओर कुबेर का ध्यान करने वाले की मनोकामना निष्फल नहीं होती।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री कुबेर यंत्रम्

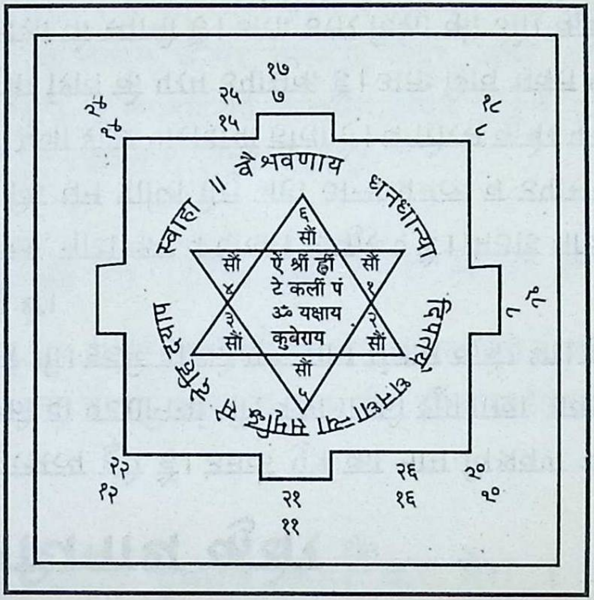

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुबेर पूजन :– कुबेर यंत्र को पंचामृत (दूध-दही-शहद-घी-शर्करा) से स्नान करावें। उस पर दूध व जल डालकर स्वच्छ वस्त्र से साफ करें। तिजोरी, गल्ला, सेफ उत्तर दिशा की ओर स्थापित कर उसमें पुष्पासन पर यंत्र बिराजें। सिन्दर से स्वास्तिक बनाकर कुबेर का आह्वान कर रोली, चन्दन, चावल व पुष्प चढ़ाकर पूजन करें।

मंत्र :– **आह्वायामि देव त्वमआगच्छ कृपां कुरु ।**
कोशं वर्द्धयमेनित्यं परिरक्ष सुरेश्वर ॥

प्रार्थना :– **धनाध्यक्षाय देवाय नरयानो पवेशिने ।**
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

ऐसा करने से दरिद्रता का नाश होकर प्रचुर धन व यश की प्राप्ति होती है।

❁ तुला तथा मान-पूजन ❁

सिन्दूर से स्वस्तिक करके पूजन करें। पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करें।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता ।
साक्षिभूता जगद्धात्री निमिता विश्वयोनिना ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ दीपावली-पूजन ❁

दीपक जलाकर पात्र में रख पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णँस्तेजः प्रवर्धय॥

ॐ दीपेभ्यो नमः॥

❁ पुरुष-सूक्त ❁

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिँ सर्वत स्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥१॥

उस विराट् पुरुष के सहस्र शिर, सहस्र नेत्र, सहस्र-२ हाथ-पैर हैं। वह समस्त भूमि को सब ओर से व्याप्त करके इस ब्रह्माण्ड से दश अंगुल ऊपर-उससे परे-भी विद्यमान है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥

यह सब जगत् पुरुष ही है। भूत, भविष्य और वर्तमान में वहीं है। वह अमृतत्त्व का और अन्न से जीवित रहने वाले समस्त जीवों का ईश-शासक है।

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३॥

इतना भारी विराट् ब्रह्माण्ड उन परम पूरुष की महिमा है। वे अपने विभूति विस्तार से भी महान् हैं। उनकी एक पाद विभूति में ही पञ्चभूतात्मक विश्व ब्रह्माण्ड है। शेष जो त्रिपाद विभूति हैं उनमें अमृत दिव्यलोक है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥ ४॥

वे प्रभु इस जगत से परे त्रिपाद विभूति में प्रकाशमान हैं। एक पाद में ही यह सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड प्रकट हो जाता है। वे सम्पूर्ण विश्व को परिव्याप्त किये हुए हैं। प्राणवान अप्राणवान जड़ चैतन्य-जगत उन्हीं से है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततो विराडजायत विराजो अधि पुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥५॥

उन्हीं आदि पुरुष महाविष्णु से विराट् हुआ। उस विराट् के अधिपुरुष वे ही हैं। वह अधिपुरुष उत्पन्न होकर अत्यन्त दीप्ति प्रकाश वाला हुआ। उसने उत्पन्न होने के पश्चात् भूमि तथा शरीरादि उत्पन्न किये।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृपदाज्यम्।
पशून् ताँश्चक्रेवा यव्या नाराण्यान् ग्राम्याश्च ये॥६॥

उस सर्वहुत यज्ञ से प्रशस्त पोषक पदार्थ घृत आदि उत्पन्न हुए। उस प्रजापति पुरुष ने वायु में उड़ने वाले (पक्षी) ग्राम में रहने वाले, वन में रहने वाले आदि पशुओं को उत्पन्न किया।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँ सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥७॥

उस सर्वहुत यज्ञ पुरुष से ऋग्वेद तथा सामवेद उत्पन्न हुए। उसी से छन्द उत्पन्न हुईं, उसी से यजुर्वेद प्रकट हुआ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८॥

उसी यज्ञ पुरुष द्वारा घोड़े उत्पन्न हुए। जिनके ऊपर-नीचे दोनों ओर दाँत हैं, ऐसे (गर्दभ आदि) पशु भी उत्पन्न हुए। उसी से गौएँ तथा भेड़-बकरियाँ भी उत्पन्न हुईं।

तं य्यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९॥

सृष्टि के पूर्व प्रकट हुए उस यज्ञ साधनभूत पुरुष को कुशाओं द्वारा प्रोक्षण करके उसी पुरुष के द्वारा देवता, साध्यगण तथा ऋषिगण आदि उस मानस यज्ञ का यजन करते भये।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किम्बाहु किमरू पादाउच्येते ॥ १०॥

उस प्रजापति विराट् पुरुष को नाना रूप से प्रकट करने पर उनकी कितने प्रकार से कल्पना की। इस पुरुष का मुख क्या है ? इसकी दोनों बाहुएँ क्या हैं ? इसकी जंघायें क्या हैं ? इसके पैर कौन कहे जाते हैं ?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरूतदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोअजायत ।। ११ ।।

इस पुरुष के मुख से ब्राह्मण हुए, बाहुओं से क्षत्रिय हुए। इस पुरुष के जो दोनों उरु हैं उनसे वैश्य और पैरों से शूद्र प्रकट हुए।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणाश्च मुखादग्निरजायत ।।१२।।

उनके मन से चन्द्रमा हुए, चक्षु से सूर्य हुए। कानों से वायु तथा प्राण हुए और मुख से अग्निदेव हुए।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यांभूमिदिशः श्रोत्रात्तथालोकाँऽअकल्पयन् ।।१३।।

उस यज्ञ पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष लोक हुआ, शिर से स्वर्ग प्रकटित हुआ। पैरों से पृथ्वी, कानों से दिशायें उत्पन्न हुई। इसी प्रकार उस पुरुष में ही ये सब लोक कल्पित हुए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

यत् पुरुषेणा हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।।१४।।

उस पुरुष के शरीर में ही देवताओं ने हविष्य की भावना करके यज्ञ का विस्तार किया। उस यज्ञ में बसंत ऋतु तो घृत, ग्रीष्म ऋतु ईंधन और शरद ऋतु हवि हुई।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद् यज्ञं तन्वानाऽवध्नन् पुरुषम्पशुम् ।। १५।।

जिस पुरुष पशु का यज्ञ में बंधन करके देवताओं ने यज्ञ किया, तब उस यज्ञ में सात (छंद) इसकी परिधियां मान लीं और इक्कीस (१२ महीने, पाँच ऋतुएँ, एक आदित्य तथा तीन लोक या तीन अग्नि) समिधायें बनीं।

यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। १६।।

देवगण यज्ञ के द्वारा उस यज्ञ पुरुष का यजन करते हैं। इन धर्मों का अस्तित्व प्रथम कल्पों में भी था। जिस स्वर्ग में पूर्व के साध्यगण देवगण रहते थे, उसी में उनके उपासक भी पहुँचते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अद्‌भ्यः सम्भृतं पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणं समवर्त्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्‌ रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्त्वमाजानमग्रे ॥ १७॥

आगे जल, भूमि और काल से रस उत्पन्न हुआ। उस रस रूपक तद्‌रूप को ग्रहण करते हुए रवि प्रतिदिन उदित होते हैं। मनुष्यों की सृष्टि से भी आगे देवताओं को रचा। एक शुभ करके देवता होते हैं। एक सृष्टि के आदि में उत्पन्न आजान (प्रधान) देवता होते हैं।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्‌ ।
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ १८॥

मैं इस महान्‌ पुरुष को जानता हूं जो आदित्य मण्डलस्थ है और जो तम से परे है। पुरुष उसी को जान कर मृत्यु को लांघ जाता है। इसके अतिरिक्त जाने का कोई अन्य मार्ग नहीं है।

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते ।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्‌ हतस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ १९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह जो प्रजापति है वह अन्तर हृदय में स्थित होकर गर्भ में प्रविष्ट होता है और (राम कृष्णादि) अनेक रूपों में उत्पन्न होता है। धीर पुरुष उसके स्थान रूप को भली भाँति देखते हैं। यह सम्पूर्ण विश्व त्रिभुवन उसी में स्थित है।

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ २० ॥

जो प्रजापति देवताओं को तेजयुक्त बनाता है, जो देवताओं का पुरोहित है, जो देवताओं के पूर्व प्रकट होता है, उस ब्राह्मी दीप्ति वाले देव को नमस्कार है।

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे ॥ २१ ॥

ब्रह्म से जायमान देदीप्यमान ज्योति स्वरूप आदित्य को प्रकट करते हुए देवता ने पहिले कहा था– जो ब्राह्मण तुम्हें जानेंगे, उनके देवता वश में होंगे।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण। सर्वलोकं म इषाण ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे प्रभो ! श्री देवी और लक्ष्मी देवी ये आपकी पत्नियाँ है। दिन और रात्रि आपके पार्श्व हैं। नक्षत्र आपके रूप हैं। पृथ्वी, स्वर्ग, मुख, विकास है। हमें आप प्यार करते हैं। इसलिए हमारा अभ्युदय चाहोगे। मैं सर्वलोकात्मक हो जाऊँ ऐसी प्रार्थना है।

❁ अथ लक्ष्मीस्तोत्रम् ❁

प्रारभ्यते

जय पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपतिप्रिये ।
जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणि ॥ १॥

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥ २॥

पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे ।
सर्वभूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरु ॥ ३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।
दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते ॥४॥

नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्यधारिणी।
वसुवृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम् ॥५॥

रक्ष त्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे।
दरिद्रात्त्राहि मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि ॥६॥

नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि।
ब्रह्मादयो नमस्ते त्वां जगदानन्ददायिनी ॥७॥

विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धिं कुरु मे सदा ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः।
चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः ॥ ९ ॥

नमः प्रद्युम्नजननि मातस्तुभ्यं नमो नमः।
परिपालय भो मातर्मां तुभ्यं शरणागतम् ॥ १० ॥

शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये।
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे ॥ ११ ॥

पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ति गुणा नरे।
शीलत्वं नैव शोभेत महालक्ष्मि त्वया विना ॥ १२ ॥

तावद्विराजते रूपं तावच्छीलं विराजते।
तावद्गुणा नराणां च यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मित्वयालंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्याः।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः॥ १४॥

लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्।
लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वाल्लक्ष्मीर्विशिष्यते॥१५॥

लक्ष्मि त्वन्द्गुणकीर्तनेन कमलाभूर्यात्यलं जिह्मतां
रुद्राद्या रविचन्द्रदेवपतयो वक्तुं च नैव क्षमाः।
अस्माभिस्तव रूपलक्षणगुणान्वक्तुं कथं शक्यते
मातर्मां परिपाहि विश्वजननि कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्॥ १६॥

दीनार्तिभीतं भवतापपीडितं धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम्।
कृपानिधित्वान्मम लक्ष्मि सत्वरं धनप्रदानाद्धननायकं कुरु॥ १७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मां विलोकय जननि हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमागतम्।
देहि मे झटिति लक्ष्मि कराग्रं वस्त्रकाञ्चनवरान्नमद्भुतम् ॥ १८॥

त्वमेव जननी लक्ष्मि पिता लक्ष्मि त्वमेव च।
भ्राता त्वं च सखा लक्ष्मि विद्या लक्ष्मि त्वमेव च॥१९॥

त्राहि त्राहि महालक्ष्मि त्राहि त्राहि सुरेश्वरि ।
त्राहि त्राहि जगन्मातर्दरिद्रात्त्राहि वेगतः ॥२०॥

नमस्तुभ्यंजगद्धात्रि नमस्तुभ्यं नमो नमः ।
धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पत्तिदायिनी ॥२१॥

दरिद्रार्णवमग्नोऽहं निमग्नोऽहं रसातले।
मज्जन्तं मां करे धृत्वा सूद्धर त्वं रमे द्रुतम् ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किं लक्ष्मि बहुनोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः ।
अन्यन्मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये ॥ २३॥

एतच्छ्रुत्वाऽगस्तिवाक्यं हृष्यमाणा हरिप्रिया ।
उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाहं तव सर्वदा ॥ २४॥

लक्ष्मी उवाच
यत्त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः ।
शृणोति च महाभागस्तस्याहं वशवर्तिनी ॥ २५॥

नित्यं पठति यो भक्त्या त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति ।
रणश्च नश्यते तीव्रं वियोगं नैव पश्यति ॥ २६॥

यः पठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धा-भक्तिसमन्वितः ।
गृहे तस्य सदा स्थास्ये नित्यं श्रीपतिना सह ॥२७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुखसौभाग्यसम्पन्नो मनस्वी बुद्धिमान् भवेत् ।
पुत्रवान् गुणवान् श्रेष्ठो भोगभोक्ता च मानवः ॥ २८॥

इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्म्यगस्तिप्रकीर्तितम् ।
विष्णुप्रसादजननं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ २९॥

राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः।
भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा ॥ ३०॥

न शस्त्रानलतोयौघाद्भयं तस्य प्रजायते ।
दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परम् ॥ ३१॥

मन्दुराकरिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः ।
पठेत्तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम् ॥ ३२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा ।
अगस्त्रिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया ॥ ३३ ॥

इत्यगस्तिविरचितं लक्ष्मीस्तोत्रं पूर्णम्।

॥ श्रीरस्तु ॥

महालक्ष्मीस्तोत्र प्रारम्भः

सिंहासनगतः शक्रः सम्प्राप्य त्रिदिवं पुनः ।
देवराज्ये स्थितो देवीं तुष्टावाब्जकरां ततः ॥ १ ॥

इन्द्र उवाच

नमस्ते सर्वभूतानां जननीमब्जसम्भवाम् ।
श्रियमुन्निद्र पद्माक्षीं विष्णुवक्षः स्थलस्थिताम् ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्रनिभेक्षणाम्।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियाम्यहम् ॥३॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभाभूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥४॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥५॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च।
सौम्यासौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयैतद्देविपूरितम् ॥६॥

का त्वन्या त्वमृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगचिंत्यं गदाभृतः ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
विनष्टप्रायमभवत्त्वयेदानीं समेधितम् ॥ ८ ॥

दाराः पुत्रास्तथाऽऽगारं सुहृद्धान्यधनादिकम् ।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ॥ ९ ॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम् ।
देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणं न दुर्लभम् ॥ १० ॥

त्वमम्बा सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता ।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम् ॥ ११ ॥

मानः कोश स्तथा कोशं मा गृहं मा परिच्छदम् ।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मा पुत्रान्मा सुहृद्वर्गान्मा पशून्मा विभूषणम् ।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षः स्थलाश्रये ॥ १३ ॥

सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।
त्यज्यंते ते नराः सद्यः संत्यक्ता ये त्वयाऽमले ॥ १४ ॥

त्वयाऽवलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
कुलैश्वर्यैश्च पूज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ॥ १५ ॥

सश्लाघ्यः सगुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान् ।
स शूरः सचविक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः ॥ १६ ॥

सद्योवैगुण्यमायांति शीलाद्याः सकला गुणाः ।
पराङ्मुमुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न तान् वर्णयितुं शक्तागुणाञ्जिह्वाऽपि वेधसः ।
प्रसीद देवि पद्माक्षि माऽस्मांस्त्याक्षीः कदाचन ॥ १८॥

पराशर उवाच
एवं श्रीः संस्तुता सम्यक् प्राह हृष्टा शतक्रतुम् ।
शृण्वतां सर्वदेवानां सर्वभूतस्थिताद्विज ॥ १९॥

श्रीरुवाच
परितुष्टास्मि देवेश स्तोत्रेणानेन ते हरेः ।
वरं वृणीष्व यस्त्विष्टो वरदाऽहं तवागता ॥ २०॥

इन्द्र उवाच
वरदा यदिमेदेवि वरार्हो यदिवाऽप्यहम् ।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मेऽस्तु वरः परः ॥ २१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्रेण यस्तवैतेन त्वां स्तोष्यत्यब्धिसम्भवे ।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयोऽस्तुवरो मम ॥ २२॥

श्रीरुवाच

त्रैलोक्यं त्रिदश श्रेष्ठ न सन्त्यक्ष्यामि वासव ।
दत्तो वरो मयाऽयं ते स्तोत्राराधनतुष्टया ॥ २३॥

यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः ।
स्तोष्यते चेन्न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखी ॥ २४॥

पराशर उवाच

एवं वरं ददौ देवी देवराजाय वै पुरा ।
मैत्रेय श्रीमहाभागा स्तोत्राराधनतोषिता ॥ २५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भृगोः ख्यात्यां समुत्पन्ना श्री पूर्वमुदधेः पुनः ।
देवदानव यत्नेन प्रसूताऽमृतमन्थने ॥ २६ ॥

एवं यदा जगत्स्वामी देवराजो जनार्द्दनः ।
अवतारः करोत्येषा तदा श्रीस्तत्सहायिनी ॥ २७ ॥

पुनश्चपद्मा संभूता यदाऽदित्योऽभवद्धरिः ।
यदा च भार्गवो रामस्तदाभूद्धरणीत्वियम् ॥ २८ ॥

रामत्त्वेचाभवत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनि ।
अन्येषु चावतारेबु विष्णोरेखाऽनपायिनी ॥ २९ ॥

देवत्वे देवदेहेयं मानुषत्वे च मानुषी ।
विष्णोर्देहानुरूपां वै करोत्येषाऽऽत्मनस्तनुम् ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यश्चैतच्छृणुयाज्जन्म लक्ष्म्या यश्च पठेन्नरः ।
श्रियो न विच्युतिस्तस्य गृहे यावत्कुलत्रयम् ॥ ३१॥

पठ्यते येषु चैवर्षे गृहेषु श्रीस्तवं मुने ।
अलक्ष्मीः कलहाधारा न तेष्वास्ते कदाचन ॥ ३२॥

एतत्ते कथितं ब्रह्मन्यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
क्षीराब्धौ श्रीर्यथा जाता पूर्वं भृगुसुता सती ॥ ३३॥

इति सकलविभूत्यवाप्तिहेतुः
स्तुतिरियमिन्द्रमुखोद्गता हि लक्ष्म्याः ।
अनुदिनमिह पठ्यते नृभिर्यैर्वसति
न तेषु कदाचिदप्यलक्ष्मीः ॥ ३४॥

॥ श्रीविष्णुपुराणे महालक्ष्मीस्तोत्रं पूर्णम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया ।
केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा ॥ १ ॥

व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमामृतोद्भवा ।
निर्व्योमा व्योममध्यस्था पञ्चव्योमपदाश्रिता ॥ २ ॥

अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी ।
नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा ॥ ३ ॥

ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा ।
स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमलाचला ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनन्तां वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी ।
शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी ॥५॥

मूर्तिः सनातनी हार्द्दी निस्तरङ्गा निरामया।
ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय विकाशिनी ॥६॥

स्वच्छन्दशक्ति र्गहना निष्कम्पार्चि सुनिर्मला ।
स्वरूपा सर्वगा पारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता ॥७॥

अकलङ्का निराधारा निस्संकल्पा निराश्रया ।
असंकीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा ॥८॥

अनौपम्या निर्विकल्पा नियन्त्रा यन्त्रवाहिनी ।
अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी ।
अनिर्देश्या प्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ॥ १० ॥

अप्रतर्क्या परिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी ।
एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी ॥ ११ ॥

सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धि र्ध्रुवा गतिः ।
ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्जवलोद्यमा ॥ १२ ॥

अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा ।
नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा ॥ १३ ॥

तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी ।
अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा ।
संधानिकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी ॥ १५॥

लक्ष्मी स्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरापूरणेनवा ।
अनुग्रहा शक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः ॥ १६॥

सत्या प्रह्वा क्रिया योग्या अपर्णा ह्लादिनी शिवा ।
सम्पूर्णा ह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमृतावहा ॥ १७॥

रजोवत्यर्कप्रतिभा ऽऽकर्षिणी कर्षिणी रसा ।
परा वसुमती देवी कान्ति शान्तिर्मतिः कला ॥ १८॥

कला कलङ्करहिता विशालोद्दीपनी रतिः ।
सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा ॥ १९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा ।
धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमतीरसा ॥ २० ॥

शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च ।
प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी ॥ २१ ॥

अवनि र्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी ।
अनन्तरूपा नन्तात्मानन्तस्था नन्तसम्भवा ॥ २२ ॥

महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा ।
महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा ॥ २३ ॥

प्रत्यक्षलक्ष्मी र्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धिगोचरा ।
नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी ॥२४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका ।
सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी ॥ २५ ॥

नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना ।
व्यक्ता व्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता ॥ २६ ॥

संकल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा ।
भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता ॥ २७ ॥

प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा ।
कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी ॥ २८ ॥

नीरूपोदिभन्नसंताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया ।
महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया ॥ २९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना ।
प्रकृति र्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करी ॥ ३० ॥

चिन्ता बुद्धिर्यशः प्राज्ञाशान्ति राप्रीतिवर्द्धिनी ।
प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥ ३१ ॥

काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा ।
सर्वातिशायिनी प्रीति र्विश्वशक्ति महाबला ॥ ३२ ॥

वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा ।
हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता ॥ ३३ ॥

योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा ।
महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वर प्रिया ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा ।
त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥ ३५ ॥

सुतारा तारिणी तारा दुर्गा संतारिणी परा ।
सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा ॥ ३६ ॥

गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्या सुशोभिता ।
आध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी ॥ ३७ ॥

आन्वीक्षिकी त्रयीवार्ता दण्डनीति र्नयात्मिका ।
गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा ॥ ३८ ॥

विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा ।
सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्तिः सुधा सर्वार्थसाधिनी ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इच्छा सृष्टिधृतिभूर्तिः कीर्तिः श्रद्धा दयामतिः ।
श्रुति मेधा धृतिर्ह्री श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ॥४०॥

अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्कारा ।
प्रतिज्ञा संततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी ॥ ४१॥

स्मृति र्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा-समा ।
संध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती ॥ ४२॥

काङ्क्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया ।
सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी ॥ ४३॥

सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना ।
हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा ॥ ४४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रा हिरणमयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा ।
त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरवरार्चिता ॥४५॥

त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी ।
पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता ॥४६॥

पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता ।
विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा ॥४७॥

विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना ।
महानारायणीदेवी वैष्णवी वीरवन्दिता ॥४८॥

कालसंकर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणीकला ।
जगत्सम्पूरणो विश्वा महाविभवभूषणा ॥४९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता ।
नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ॥५०॥

ऐन्द्री कामधेनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा ।
दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना ॥५१॥

गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना ।
महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा ॥५२॥

युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिंगलाकला ।
त्रैलोक्यभूषणा भीमाश्यामा त्रैलोक्यमोहिनी ॥५३॥

महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना ।
शंखिनी लेखिनी स्वस्थालिखिता खेचरेश्वरी ॥५४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भद्रकाली चैकवीरा कौमारी भवमालिनी ।
कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका ॥ ५५ ॥

बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका ।
अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना ॥ ५६ ॥

वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा ।
महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया ॥ ५७ ॥

उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी ।
सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया ॥ ५८ ॥

सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी ।
हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा ॥ ५९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूर्य्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी ।
पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाता मृतोद्भवा ॥६०॥

महाधना च या शृंगी कर्द्दमी कम्बुकन्धरा ।
आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा ॥६१॥

वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा ।
कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी ॥६२॥

योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी ।
कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा ॥६३॥

कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया ।
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानांपरिरक्षिणी ॥६४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता ।
घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना ॥ ६५ ॥

महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना ।
सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी ॥ ६६ ॥

आर्या यशोदा सुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा ।
दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी ॥ ६७ ॥

भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी ।
क्षीराब्धितनया पद्मा कमला धरणीधरा ॥ ६८ ॥

रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी ।
प्रज्ञाधारामितप्रज्ञा वेदमाता यशोवती ॥ ६९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला ।
अन्तर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरागतिः ॥७०॥

दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला ।
अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता ॥७१॥

सुदीक्षा लेलिहाना च कराला विश्वपूरका ।
विश्वसंधारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया ॥७२॥

उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिन्दुमालिनी ।
क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा ॥७३॥

हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा ।
आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया ॥७४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मातृका माधवी मुख्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा ।
सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमंगला ॥७५॥

श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना ।
हंसा हीन करी हंसी हृद्या हृत्कमलालया ॥७६॥

सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायतेक्षणा ।
सावित्री सत्यसंकल्पा कामदा कामकामिनी ॥७७॥

दर्शनीया दृशादृश्या स्पृश्या सेव्या वरांगना ।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना ॥७८॥

आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी ।
श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा ॥७९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अचिन्त्या अनन्तविभवा भवभावविभावनी ।
निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता ॥ ८० ॥

बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया ।
तोषिणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना ॥ ८१ ॥

उद्यानगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी ।
कूष्माण्डा दारुणा चण्डा किराती नन्दनालया ॥ ८२ ॥

कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी ।
सौदामनी मेघरवा दैत्यदानवमर्द्दिनी ॥ ८३ ॥

जगन्माता भयकारी भूतधात्री सुदुर्लभा ।
काश्यपी शुभदाता च वनमाला शुभावरा ॥ ८४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी ।
गान्धर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलानना ॥ ८५ ॥

इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया ।
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया ॥ ८६ ॥

जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना ।
मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता ॥ ८७ ॥

व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला ।
रसलक्ष्मी जगद्योनि गंन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया ॥ ८८ ॥

श्रवणा श्रावणी नेत्री रसनाप्राणचारिणी ।
विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना ॥ ८९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्द्धिनी ।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥ ९० ॥

गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती ।
सर्वमंगल्यमांगल्या सर्वकामसमृद्धिदा ॥ ९१ ॥

सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता ।
सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः ॥ ९२ ॥

अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तुदेवता ।
मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना ॥ ९३ ॥

अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा ।
राजश्री रूपसहिता ब्रह्मश्री र्ब्रह्मवन्दिता ॥ ९४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जयश्री र्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम् ।
सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्री र्निष्कलप्रिया ॥९५॥

धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी ।
कद्रूर्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी ॥९६॥

महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा ।
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्ति स्तृप्ति र्व्याप्ति प्रभाकरी ॥९७॥

तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती ।
रत्ना रत्नावली भूता शतधामा शतापहा ॥९८॥

त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्द्दिनी घोषवर्जिता ।
साध्या दितिद्रितिर्देवी मृगवाहा मृगाङ्कगा ॥९९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नकराश्रया ।
हिरण्यरजतद्वन्द्वा शंखभद्रासनस्थिता ॥ १०० ॥

गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसप्रिर्जलाश्रया ।
मरीचिश्चीरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा ॥ १०१ ॥

सुसूक्ष्मा निर्वृतिः स्थूला निवृत्तारतिरेव च ।
मरीचिर्ज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा ॥ १०२ ॥

दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रवोधिनी ।
भास्वरा संहति स्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला ॥ १०३ ॥

सांगा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः ।
कपिला नीलरक्ता चसुषुम्णा विस्फुलिंगिनी ॥ १०४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा ।
सम्पूर्णमण्डला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा ॥ १०५ ॥

जया पुष्टिकरी च्छाया मानसाहृदयोज्ज्वला ।
सुवर्णकरणी श्रेष्ठा मृतसंजीवनीरणे ॥ १०६ ॥

विशल्यकरणी शुभ्रा संधिनी परमौषधिः ।
ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्द्वी रत्नसम्भवा ॥ १०७ ॥

विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका ।
नित्योदिता नित्यहृष्टा नित्यकामकरीषिणी ॥ १०८ ॥

पद्माङ्का वज्रचिह्ना च वक्रदण्डविभासिनी ।
विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी ॥ १०९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मानिनी मंगला मान्या मानिनी मानदायिनी ।
विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥ ११० ॥

हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी ।
प्रत्यगिंरा सोमगुप्ता मनोऽभिज्ञा वदन्मतिः ॥ १११ ॥

यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धनी ।
अमृता धारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची ॥ ११२ ॥

संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यमृताप्रभा ।
अगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताक्षता ॥ ११३ ॥

सर्वार्थसाधनकरी धातुर्धारणिकामला ।
करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया ॥ ११४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकाशिनी ।
माला काञ्चनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा ॥ ११५ ॥

प्रक्रिया परमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया ।
विजृम्भणा च वज्राख्या शृंखला कमलेक्षणा ॥ ११६ ॥

जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा ।
मूलप्रकृति रीशानी योगमाता मनोजवा ॥ ११७ ॥

धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा ।
धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता ॥ ११८ ॥

सुकुमारी सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा ।
सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्यशक्तिर्गुहालया ॥ ११९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हलायुधा चैकवीरा सर्वशस्त्रसुधारिणी ।
व्योमशक्ति र्महादेहा व्योमगा मधुन्मयी ॥१२०॥

गङ्गा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती ।
तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी ॥१२१॥

बाणप्रहरणाबाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी ।
ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा ॥१२२॥

काम्याचरी च काम्या च कामाचार विहारिणी ।
हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना ॥१२३॥

अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा ।
सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया ॥१२४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वाङ्गयोनिः साव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी ।
विष्णुवक्षस्थलगता किमतः परमुच्यते ॥ १२५ ॥

परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया ।
सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम ॥ १२६ ॥

इति नाम्ना सहस्र तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम् ।
परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागतः ॥ १२७ ॥

यश्चैतत् कीर्तयेन्नित्यं शृणुयाद् वापि पद्मज ।
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ १२८ ॥

श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः ।
भोगैश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम् ॥ १२९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्पाश्चैस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधरप्रियाम् ।
ततो नामसहस्रेण तोषयेत् परमेश्वरीम् ॥ १३० ॥

नामरत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेद् ।
प्रसादाभिमुखीलक्ष्मीः सर्व तस्मै प्रयच्छति ॥ १३१ ॥

यस्या लक्ष्म्याश्चसम्भूताःशक्तयो विश्वगाः सदा ।
कारणत्वे न तिष्ठन्ति जगत्यस्मिन्श्चराचरे ॥ १३२ ॥

तस्मात् प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा ।
सुप्रीताः शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि ॥ १३३ ॥

एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः ।
तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा ॥ १३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथैवैका परा शक्तिः श्रीस्तस्य करुणाश्रया ।
ज्ञानादिषाड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा ॥ १३५॥

एकैव शक्तिः श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्तते ।
परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी ॥ १३६॥

अनन्तनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका ।
जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥ १३७॥

तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी ।
सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् ॥ १३८॥

यो यो जगति पुम्भावः स विष्णुरिति निश्चयः ।
या या तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥ १३९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते ।
अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः ॥ १४० ॥

अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः ।
महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम् ॥ १४१ ॥

ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मीं संशुद्धचेतसः ।
पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठन् स्तोत्रमिंद क्रमात् ॥ १४२ ॥

दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् ।
सकामानां च फलदामकामानां च मोक्षदाम् ॥ १४३ ॥

पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम् ।
महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नुमः ॥ १४४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना,
क्वचिदमलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः।
क्वचिदपि दयिताङ्ग्रे चामरव्यग्रहस्ता,
क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रतो हेमकान्तिः ॥ १४५ ॥

आदि ब्रह्मपुराणान्तर्गत सर्वकामप्रदायकं लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री लक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशि - दिन सेवत, हर - विष्णू - धाता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

दुर्गारूप निरंजनि, सुख - सम्पत्ति-दाता ।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

तुम पाताल - निवासिनि, तुम ही शुभ - दाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

जिस घर तुम रहती, तहँ, सब सद्गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता ।
खान - पान का वैभव सब तुम से आता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरो दधि जाता।
रत्न चतुद्रश तुम बिन कोई नहिं पाता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

आरति लक्ष्मीजी की, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ॥ जय लक्ष्मी०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नव वर्ष का तिथि निर्णय

श्री वैभव महालक्ष्मी दर्शन एवं श्री वैभव महालक्ष्मी यंत्र

• मुख्यतः तारीख • तिथि का समय कब से कब तक • विक्रम-शाका सम्वत् • व्रत-त्यौहार • छुट्टियां • नक्षत्र राशि प्रवेश • चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त • विवाह आदि मुहूर्त्त • पंचक • मूल • भद्रा • शुभ-अशुभ योग • सूर्य-चन्द्र ग्रहण की जानकारी • ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र • राशि ज्ञान-फल • राशि रत्न धारण विधि • दिन-रात का चौघड़िया • दिशा शूल परिहार • दूध-अखबार का हिसाब का कोष्टक • मौसम • तेजी/मंदी मार्किट रुख • विश्व घटना चक्र • अमुक व्रत-पूजन कैसे और किस समय करें • देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र व उनके जपनीय मंत्र • किस देवी-देवता के मंत्र का जाप किस माला से करें • भगवान राधा कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिरों में मनाये जाने वाले विशेष पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि उपयोगी सामग्री से सुसज्जित है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection